मीरांशाह तबरेजमें रहा करता था जहां वह २४ जीकाद सन ८१० (द्वि० बैशाखबदि १० सं. १४६९) को करायू सुफतुर्कमान के मुकाबिलेमें मारागया उसके अबाबक्र मिरजा, अलंकर मिरजा, उसमान मिरजा चिलपी मिरजा, उमर खलील मिरजा, सुलतान मोहम्मद मिरजा, एजलमिरजा, और सियूरगतमश मिरजा यह आठ बेटे थे ।

बाबर बादशाह सुलतान मोहम्मद मिरजा की औलाद में थे। इस लिये इसीके वंशका हाल लिखाजाता है।

सुलतानमोहम्मदमिरजा ।

यह मीरांशाह का पांचवां बेटा था और हमेशा अपने से बड़े भाई उमरखलील मिरजा के साथ समरकन्द में रहा करता था। अखीर उमर में अपने चचा मिरजा शाहरुख़के पास जा रहा था जो उसे बहुत अदब और आदर से रखता था और अपने बेटे अलगबेग से उस के सत्स्वभाव और सदाचार के बखान किया करता था।

मोहम्मदमिरजा जब मरने लगा तो मिरजा अलगबेग सुख पूछने को आया मिरजा के २ बेटे अबूसईद मिरजा और मनूचहर मिरजा थे। मिरजा ने बड़े बेटे की बहुतसी सिफारिश मिरजा अलगबेग से की और मरगया ।

सुलतान अबूसईदमिरजा ।

सन् ८३० (सं० १४८४) में पैदा हुआ था। बाप के पीछे बहुत दिनोंतक अपने चचेरे भाई और खुरासान के बादशाह मिरजा अलगबेग की खिदमत करता रहा फिर २९ बर्ष की उमर में भाग्यबल से समरकन्दका बादशाह होगया और १८ बर्ष- तक तूरान तुर्किस्तान, बदखशां काबुल गजनी और कन्धार में हिन्दुस्तान की सर- हदतक राज करके २२ रजब सन ८७३ (फागुणबदि ८ सं० १५२५) को शाहरुख़ मिरजा के बड़े पोते यादगारमोहम्मद मिरजा के हाथ से मारागया । इस के दस बेटे सुलतानअहमदमिरजा, सुलतानमोहमदमिरजा, उमरशेखमिरजा, सुलतान मुरादमिरजा, सुलतानवलदमिरजा, अलगबेगमिरजा, अबाबक्रमिरजा, सुलतान खलीलमिरजा और शाहरुखमिरजा थे ।

उमरशेख़ मिरजा।

यह सुलतान अबूसईदमिरजा का चौथा बेटा था यह सन् ८६० (सं० १५१२। १३) में पैदा हुआ था पिता ने इसको इंदजानका बापोती राज और ओरजंद का तख़्त दियाथा. उससे आगे उत्तर में मगूलिस्तान का मुल्क था मगर इसने अपनी सरहद्दों का एसा जाबताकिया था कि वहां के बादशाह यूनसखां ने बहुत् ही जोर लगाया मगर इधर होकर उसके बापके मुल्क में न आसका।

फिर नुमरशेखमिरजा बाप का मरना सुन कर इंदजान के तख़्त पर बैठा। ताशकंद शाहरुखिये और सीरामके इलाके भी उसके पास थे उसने कईबार समरकंद पर चढ़ाई की और हरदफे यूनसखानको अपनी मदद पर लाया परंतु जब उसे मदद लाता तबभी अपना एक इलाका उसको देता था और वह कुछ नकुछ बहाना करके मगूलिस्तान को लौट जाता था। अख़ीर मरतबे ताशकंद भी उसको दे दिया जो सन् ९०८ (सं १५६०) तक शाहरुखियां समेत चगताईबादशाहों के कबजे में रहा।

पहिले तो यूनसखान मुगलों का बादशाह था फिर उसका बड़ा बेटा सुलतान महमूदखान, हुआ वह उमरशेखमिरजा के बड़े भाई और समरकंद के मालिक सुलतान अहमदमिरजा से मिलकर सन् ८९९ (संवत् १५५०। ५१) में उमरशेख मिरजा पर चढ़आया दक्खन की तर्फ़ से अहमदमिरजा चढ़ा मगर इनके पहुंचने से पहिले ही उमरशेख मिरजा ता० ४ रमजान सन् ८९९ (बैसाख सुदि पं० सं० १५५१) को कबूतर खाने की छत पर से गिरकर मरगया।

यह बहुत पढ़ालिखा था और न्याय नीति से राज करता था इसके ३ बेटे और ४ बेटियां थीं।

बेटे।

१ बाबरमिरजा (बाबर बादशाह)
२ जहांगीर मिरजा.
३ नासिर मिरजा.

---

१ पुराना नाम फ़नाक़त।

लड़कियां ।

१ खानजादाबेगम बाबर से ५ वर्ष बड़ी सगी बहन.

२ महरबानू बेगम. जहांगीर मिरजा की सगी बहन.

३ यादगार सुलतान बापके मरे पीछे हुई थी.

४ रजिया सुलतान बापके पीछे जन्मी थी.

५ एक और लड़की जो बचपन में मरगई.

औरंगज़ेब आलमगीरबादशाह ।

सन् १०६७ हिजरी संवत् १७१४ सन् १६५७ ईसवी.

औरंगज़ेब औरंगाबादमें.

७ जिलहज सन १०६७ (भादों सुदि ९ सं० १७१४ ६ सितंबर सन १६५७) को शाहज़हां बादशाह बीमार होकर बादशाही के कामों को छोड़ बैठा बड़े शाहजादे दाराशिकोह ने मौका पाकर खबरोंका आनाजाना बंद करदिया जिससे मुल्कोंमें बड़ी खलबली पड़गई। चौथा शाहजादा मुरादबख्श जो गुजरातका सूबेदार था अहमदाबाद में तख्त पर बैठ गया और दूसरा शाहजादा शाहशुजा भी बंगालमें बादशाह होकर पटने तक चढ़आया। तीसरा शाहजादा औरंगजेब दक्षिणमें था और इसी की तर्फ से दाराशिकोह के दिलमें खटका था जिससे वह बादशाहको उसकी तर्फसे बहकाता रहता था। उसीतरह अब भी दाराशिकोहने शाहजहांको उलटासीधा समझाकर उस लशकर को जो बादशाहकी सवारीमें चढा करता था हजूरमें बुलवाया और बीमार होने पर भी बादशाहको जमुना के रस्तेसे आगरे में लाया इससे उसका यह मतलब था कि उनके जीते जी उनकी मददसे ही शाहशुजा और मुरादबख्श से निबडकर औरंगजेब को भी ठिकाने लगादे।

आगरेमें पहुँचकर उसने राजा जैसिंह को तो बादशाही फौजके साथ और अपने बड़े बेटे सुलेमान शिकोह को अपनी फौजके साथ शाहशुजाअ पर भेजा और राजा जसवंतसिंह को जिसने बादशाह की मा के पक्ष से बहुत बड़ा दरजा और महाराजा का खिताब पाया था और जो हिन्दुस्तानके राजाओं में उमदा (मुख्य) था बहुतसे लशकर के साथ दक्षिणका रस्तारोकने के लिये मालवे को रवाने किया और कासिमखां को एक अलग फौज देकर उससे कहा कि वह महाराजा के साथ उजैन में जावे और जो जरूर हो तो गुजरात में पहुंच कर मुराद बख्शको वहां से निकाल दे।

दाराशिकोह की कहासुनीसे बादशाह का भी दिल औरंगज़ेब से फिरगया था इस- लिये उसने औरंगजेब के वकील ईसाबेग को बिला कसूर कैद करके उसका माल असबाब छिनवालिया । मगर फिर इसकाम को बुरा समझकर उसे छोड़ भी दिया।

सन् १०६८ हि० संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

बरहानपुरमें औरंगज़ेब.

औरंगजेब पहिले से ही दारा शिकोह से खफा था क्योंकि उसका दिल हिन्दु- ओं के मजहब की तरफ झुका हुआथा इसलिये अब उसने अपने दीन को मदद के लिये बादशाह के पास जाने और मुरादबख़्श को भी लेजाकर उसके कसूर माफ कराने का मनसूबा बांधा मगर जसवंतसिंह और कासिमखां की तर्फ से लड़नेका खटका था इसवास्ते लड़ाई की तैयारी करके जमादिउलअव्वल सन् १०६८ हि० (माहसुदि २ । २९ जनवरी १६५८) को औरंगाबाद से बुरहानपुर की तर्फ कूच किया और २९ (फागुन बदि ११ । १२ । १८ फरवरी) को वहां पहुंचकर बाद- शाह को मिजाजपुरसी 'सुखपूछने' की अरज़ी भेजी मगर एक महीने तक जवाब नहीं आया और बुरी बुरी खबरें पहुंचीं । महाराज जसवंतसिंह भी दाराशिकोहके लिखने से धमकियां देनेलगा तब २९ जमादिउल आख़िर (चैतबदि १२ । २० मार्च) शनिवार[१] को आगरे की तरफ कूच हुआ ।

२१ रजब (वैशाख बदी ८ संवत् १७१५ । १५ अप्रेल) को देपालपुर से चलने पर मुरादबख़्श भी अहमदाबाद से आगरे को जाता हुआ मिलगया उज्जै- नसे सात कोस पर गांव धरमातपुर में डेरा हुआ जहांसे १ कोस पर जसवंतसिंह और क़ासिमखां लड़ने के इरादे से ठहरेहुए थे । जसवंतसिंह ने लड़ने की तैयारी की । औरंगजेब ने भी गुस्से में आकर २२ रज्जब सन् १०६८ हिजरी (वैसाखबदि ९ । १६ अप्रेल) शुक्रवार को परा बांधने और रणसिंगा फूकने का हुक्म देदिया ।

महाराजा जसवंतसिंहका लड़ना और भागना ।

दोनों फौजों के मिलते ही जसवंतसिंह लड़नेको सवार हुआ । हिन्दुओं की फौज बहुत थी तो भी औरंगजेब के लशकर की तलवारों से कट गई, जसवंतसिंह थोड़े से

---

१ आगरे की छपीहुई मुआसिर आलमगीरी में गुरुवार लिखाहै सो ग़लत है क्योंकि हिसाब से भी शनि आताहै और संवत् १७१४ के पञ्चांग में भी चैतबदि १२ को शनि ही है ।

आदमियों के साथ भागकर अपने वतन जोधपुर की तर्फ चल दिया। औरंगजेब की फ़तह हुई कासिमखां और बादशाही लशकर भी सब भाग गया ६००० दुशमन मारे गये और उनका माल असबाब औरंगजेब के हाथ लगा। वह १ रमजान (जेठ सुदि २। २४ मई) को चम्बल से उतरा। वहां दाराशिकोह के धोलपुर से लौटजाने की खबर आई यह लड़ाई सन् १०६८ हि०, सं. १७१५, सन् ई० १६५८ में हुईथी।

दाराशिकोहका लड़ना और भागना।

६ रमजान (जेठसुदि ७। २९ मई) को औरंगजेब दाराशिकोह के लशकर से १ कोस इधर ठहरा। दाराशिकोह उसी दिन सवार होकर अपने लशकर से निकला मगर औरंगजेब के डर से आगे न बढ़कर वहीं खड़ा रहा। अपने सजेहुए सिपाहियों को दिनभर धूप लूं और प्यास से मारा आखिर शाम को लौट गया।

दूसरे दिन ७ रमजान (जेठ सुदि ८-९। ३० मई को) औरंगजेब ने अपनी फौज को आगरे पर बढ़ने का हुक्म दिया। दाराशिकोह फिर उसी तरह सुबह से डटाहुआ था, औरंगजेब की फौज को देखते ही लडने के लिये आगे बढा। दोनों तरफ से तोप और बंदूक की लडाई शुरूहुई फिर तलवार चली। दाराशिकोह के सरदार रुस्तमखां राव शत्रुशाल और राजा रायसिंह वगैरह बहुत सी लडाई करके मारेगये। अभी और भी बहुत से लोग उसके लशकर में जानदेने को मौजूद थे मगर वह ऐसा घबरागया था कि हाथी से उतर कर घोडे पर सवार हुआ। इस बेमौक़ा हरकत से उसकी फौज बिखर कर भागनिकली और औरंगजेब की फतह होगई। इस लडाई में दाराशिकोह के इतने अफसर और सरदार मारेगये कि उतने किसी लडाई में नहीं सुनेगये थे। औरंगजेब के सरदारों में से आजमखां के सिवाय जिसका दूसरा नाम मुलतिफ़ित खां भी था और जो फ़तह होने के पीछे लू लगजाने से मरा था और कोई काम न आया।

दाराशिकोह भागकर अपने एक लडके और कई नौकरों के साथ शाम को आगरेमें पहुंचा और तीनपहर रात तक अपनी हवेली में रहकर दिल्ली को चलदिया।

---

१ कलकत्ते की छपी प्रति में मारवाड़ है। २ गर्महवा।

औरंगजेब उसदिन तो दाराशिकोह के डेरे में रहा और दूसरे दिन समूगिरमें पहुंचकर बादशाह को इस लड़ाई के उज्रकी अरजी भेजी वह १० रमजान (जेठ सुदि १२ । २ जून) को आगरे के पास जाकर नूरमंजिल बाग़ में उतरा। बादशाह ने अरजीका जवाब भेजा और दूसरे दिन आलमगीर नाम एक तलवार भी उसको भेजी।

बादशाही अमीर और बादशाहकी ड्योढी के सब नौकर चाकर औरंगजेब से आमिले और वह सब को राजी करके २० रमज़ान (असाढ़ बदि ७ । १२ जून) को शहर में गया और दाराशिकोह की हवेली में ठहरा।

२१ (असाढबदि ८। १३ जून)को खबर आई कि दाराशिकोह १४ रमजान (असाढबदि १ । ६ जून) को दिल्ली पहुंच गया है।

औरंजेब का इरादा बादशाह की खिदमत में हाज़िर होने का था लेकिन दाराशिकोह ने शिकायत खत भेज भेज कर शाहजहां का मिजाज़ बिगाडदिया था, इसलिये औरंगजेब इस इरादे से हटकर २२ रमजान(असाढबदि ९ । १४ जून) को दिल्ली की तर्फ़ रवाना हुआ।

सन् १०६८ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई.

औरंगजेब (मथुरामें)

१४ रमजान (असाढवादे ११।१७जून)को घाट स्वामी में दाराशिकोह के दिल्ली से भी भागने की खबर आई और चांदरात (आसाढसुदि द्वितीया । २२ जून)को बहादुरखां उसके पीछे भेजागया।

२ शव्वाल (असाढसुदि ४ । २४ जून)को औरंगजेब ने मथुरा में शाहज़ादे मुरादबख्श को फसाद करने के इरादेमें देखकर उसे पकडलिया और शेख़मीर को सौंप कर दिल्ली के किले में भेजदिया।

दाराशिकोह लाहोरको गयाथा इस लिये औरंगजेब भी पंजाब को रवाने हुआ।

औरंगजेब का बादशाह होना।

हि. सन् १०६८ सं० १७१५ १६५८ ई०

ज्योतिषियों ने तख्त पर बेठने का महूर्त १ जीकाद मुआबिक १५ अमरदाद (सावनसुदि तृतीया । २३ जौलाई) शुक्रवार को निकला था मगर औरंगजेब

को इतनी फुरसत न थी कि दिल्ली के किले में जाकर धूमधाम से तख्त पर बैठे इसलिये महूर्त साधने के लिये आअज्जाबाद में टहर कर उस दिन तख्त-नशीनीका जुलूस किया गया शाहज़ादों और अमीरों को बडे बडे इनाम दिये गये लेकिन खुशी और सिके खुनबे की तजबीज दूसरे जुलूस पर मोकूफ रखकर फिर १ फौज खलीलुल्लाहखां के साथ बहादुरखां से जामिलने और सुतलज नदी से उतरने का बंदोबस्तकरने के लिये भेजी गई। इतने में यह खबर पहुंची कि सुलेमांशिकोह गंगा के ऊपर हरिद्वार पहुंच कर सहारनपुर के रस्ते से अपने बाप को मिलाना चाहताहै। बादशाहने शायस्ताखां और शेखमीर वगैरह को उस के मुकाबले पर जाने का हुक्म दिया।

२ जीकाद ११ अमरदाद (सावनसुदि ४। ९। २४ जौलाई) को बादशाह के डेरे पंजाब जाने के लिये बाहर निकालेगये।

१९ (भादों बदि ३। ६ अगस्त) को लशकर के सुतळज से उतरने और दाराशिकोह के आदमियोंके भागने की खबर बहादुरखां की अरज़ी से मालूम हुई और इन्हीं दिनों में सुलेमांशिकोह के कशमीर के पहाडों में भागजाने के समाचार भी सुनेगये जो फौज उसके पीछे गई थी उसको लौट आनेका हुक्म हुआ।

सन् १०६८ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगजेब (पंजाबमें)

दाराशिकोहने लाहौर में पहुंचकर २० हजार सवार जमा करलिये और बहादु-रखां और खलीलुल्लाहखां के सतलज से उतरने की खबर सुनकर रस्ता रोकनेके लिये दाऊदखांके साथ बहुतसे आदमी व्यास नदी पर भेजदिये पीछे से सिपहर-शिकोह को भी भेजा।

बादशाहने यह सुनकर राजा जैसिंहको भी भेजकर अगले लशकर में शामिल किया। दाराशिकोह यह बातजानकर लाहौर में भी न ठहरसका और मुलतान को चला गया।

इन्हीं दिनों में महाराजा जसवंतसिंह शर्मींदा हुआ अपने वतन से आया बादशाह ने कसूर माफ करके उसे दिल्ली में भेज दिया।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (मुलतानमें)

२४ जिलहज्ज (आसोज बदि ११ । १३ सितंम्बरको) हतपुरपट्टी में खलीलुल्लाहखां वगैरह की अरजी से बादशाह को मालूम हुआ कि दाराशिकोह बडे ठाठसे बादशाही लशकरके मुकाबिले को लाहोर से निकला है और इसी लिहाजसे बादशाही लशकरने उसका पीछा करनेमें सुस्ती की थी। उसपर बादशाह ने उसी मंजिल से शाहजादे मोहम्मदआजम को तो फालतू लशकर और कारखानोंके साथ लाहोर में भेजदिया और खुद दाराशिकोह के पीछे धावाकरने वालेथे कि इतनेही में खबर पहुंची कि दाराशिकोह मुलतान में भी नहीं ठहरसका भकर को चलदियाहै। बहुत से नौकर उसको छोडगयेहैं और उसकी परेशानी बढतीजाती है इस पर बादशाह धावा मोकूफ रखकर धीरे २ उसके पीछे गये और मुलतान तक रस्ते में कहीं नहीं ठहरे।

सन् १०६९-

४ मोहर्रम सन् १०६९ (आसोज सुदि ३। २२ सितम्बर) को सफशिकनखां मुलतान से दाराशिकोहके पीछे रवाने हो चुकाथा तो भी बादशाह ने शेखमीर को ९००० सवारों के साथ फिर भेजा।

सन १०६९ हि. संवत १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (दिल्लीमें)

अब यह खबर पहुंची कि मँझलाभाई शाहशुजा जो बादशाह के तख्त पर बैठने से पहिले तक बहुत मेल मिलाप रखता था बंगाले से लडने को चला आताहै बादशाह १२ मोहर्रम (आसोजसुदि १४ । ३० सितंबर) को मुलतान से कूच करके ४ रबीउलअव्वल (मार्गशिरसुदि ५ । १९ नवम्बर) को दिल्लीके किले में दाखिल हुए, शाहशुजाके बागीहोने की खबरें लगातार पहुंचतीथीं तो भी चाहते थे कि जहांतक होसके टालजावें मगर वह तो बनारस तक बढाही चलाआया और लडने को तैयारहुआ तबतो बादशाहजादे मोहम्मद सुलतान को हुक्मदेनापडा कि

७ रबीउलअव्वल (मगसरसुदि ८ । २२ नवम्बर) को आगरे से उधर जावे। इतनेही में फिर यह खबर आई कि शाहशुजा तो बनारस से भी आगे बढाचाहता है इसपर बादशाह की यह सलाह ठहरी कि सोरों की शिकारगाह में चलकर उधर की खबरों का रस्ता देखें जो शुजा पटने को लौट जावे तो अगले लशकर को भी लौटा ले नहीं तो जाकर उसको सजादें ।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (सोरोंमें)

१६ रबीउलअव्वल (पौषबदि २ । १ दिसम्बर) को दिल्लीसे कूचहुआ २० (पौषबदि ६ । ५ दिसम्बर) को खबर आई कि अगला लशकर कल इटावे में जापहुंचाहै। बादशाह भी शिकार खेलते हुए ३ रबीउलआखिर (पौषसुदि ४ । ११ दिसम्बर को सोरों में पहुंचे और शाहशुजाअकी मनसा मालूम करनेके लिये उसके नाम नसीहत का १ खत भेजा, मगर जब यकीन होगया कि रिआयत करनेसे कोई फायदा नहीं है तो ५ (पौष सुदि ६ । १८ दिसम्बर) को सोरों से चढाई की और शाहजादे मोहम्मद सुलतानको लिखा कि लडाई में जलदी न करके हमारे पहुंचने का रस्ता देखे ।

सन् १० ६९ हि- संवत् १७१५ सन्-१६५९ ई०

औरंगज़ेब (कोड़ेमें)

१७ (माहबदि २ । ३१ दिसंबर) को कसबे कोडाके पास जहां शाहजादा मोहम्मदसुलतान ठहरा हुआ था और शाहशुजाअ भी वहांसे ४ कोसपर आपहुंचा था बादशाह के डेरे हुए और इसी दिन मोअज्जमखां भी जो खानदेश से बुलायागया था बादशाही लशकर से आमिला ।

शाहशुजाअसे लड़ाई ।

शाहशुजाअने लडने के इरादे से तोपखाना आगे लगा रक्खाथा १९ रबीउलआखिर (माहबदि ५ । २ जनवरी) इतवार को बादशाह ने कोडे में पहुंचनेसे ती-

---

१-कलकत्तेकी प्रतिमें १८ तारीख़ गलत छपीहै क्योंकि आगे १६ है ।

सरे दिन हुक्म दे दिया कि तोपखाना बढाकर शाह की फौजपर आग बरसावें और लशकर भी लडने को आगे बढे यह सुनते ही बादशाही लशकर जोश में आया और ९०००० के करीब सवार लडने को तैयार हुए उर्दूय मुअल्ला (बडेलशकर) और दौलतखाने के वास्ते यह हुक्महुआ कि जहां हैं वहीं रहें ।

उसी दिन शाहशुजाअने भी अपनी फौजों के पैर जमाये । बादशाह भी चार घडी दिन चढे पीछे रवाने होकर तीसरे पहर को उसके लशकर से आधकोसपर जा उतरे मगर शाहशुजाअ लडने को नहीं आया अपने कुछ तोपखाने को आगे भेजदिया राततक लड़ाई होतीरही । फिर उसने अपना लशकर पीछे बुलालिया ।

बादशाह मोरचों का बंदोबस्त और खबरदारी की ताकीद करके एक छोटे से दौलतखाने में जो वहां बनालिया गया था सोगये । पिछलीरात को एक अजब गडबड मची जिसे नासमझ लोगोंने बडी भारी शकिस्त समझी और बादशाही लशकर में भागड पडगई । इसका सबब यह हुआ कि महाराजा जसवंतसिंह जाहिर में तो ताबेदारी करता था मगर दिल में दुशमनी रखता था । बादशाह ने इस वक्त उस को दाहनी अनी (फौज) का सरदार बनाया था उसने भागने का इरादा करके शाहशुजाअ को खबरदी और पिछली रात को अपनी सब फौज और दूसरे राजपूतों के साथ मुह फेरा । बादशाहजादे मोहम्मद सुलतान का लशकर उसके रस्ते में था इसलिये उसके आदमियों ने पहिले उसी को लूटा फिर उर्दू (छावनी) में बहुत लूट हुई और बुरी २ खबरें उड़ीं लुटेरों ने कारखानों खजानों बादशाही-जानवरों अमीरों और सिपाहियों के माल असबाब पर खूब हाथ मारे ।

सन् १०६९ हि. संवत १७१५ सन १६५९ ई०

औरंगज़ेब (खजवेमें)

यह ख़बर बादशाह तक पहुँची मगर वह बिलकुल नहीं घबराये । आधे से जियादा लशकर बिखरगया था तो भी लशकर के कम रहजाने का कुछ फिकर न करके बादशाह लडाई में गये । शाहशुजाअ ने कल की तरकीब बदल कर सेना सजाई । दोनों तरफ़ से बान तोप और बंदूकों की लडाई शुरू हुई खूब आग बरसी जहां बादशाही फ़ौज हारती थी वहीं बादशाह जाते थे और ख़लल नहीं पडने देते थे ।

उनकी सवारी में २००० से जियादा सवार नहीं थे तो भी मजबूती से जमकर लडते थे, उनकी बहादुरी से आखिर फतह होगई। शुजाअ की फौज भाग निकली। बादशाह उस की छावनी में जोखजवे के तलावपर थी जाकर ठहरे और उसीदिन शाहजादे मोहमम्मद सुलतान को शुजाअ के पीछे भेजकर २६ (माह बदि १२। ९जनवरी) तक आप वहीं रहे। २७ (माहबादि १३। १० जनवरी) को कूच हुआ चांदरात (माह सुदि १।१३ जनवरी) तक गंगा के किनारे पर ठहरे, यहां मोअज्जमखां और दूसरे बडे बडे अमीरों को हुक्महुआ कि शाहज़ादे मोहम्मदसुलतान से मिलकर शुजाअ के पीछे जावें।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन १६५९ ई०

औरंगज़ेब गंगाके किनारेपर.

दाराशिकोह का पीछा।

सफ़शिकनखां जो ४ मोहर्रम सन् १०६९ (आसेजसुदि ६। २२)सितम्बर को मुलतान से दाराशिकोह के पीछे गया था व्यास नदी से उतरतेही यह सुन कर कि दाराशिकोह आगे चला-गया है फिर आगे न बढा और कुछ दिन तक शेखमीरके इन्तजार में ठहरा रहा, जब दोनों लशकर मिलगये और यह खबर पहुंची कि दारा-शिकोह भकर में भी नदी से उतरकर सक्खर को गयाहै तब यह सलाह हुई कि शेख़मीर तो नदी से उतरकर सक्खरके उधर जावे और सफ़शिकनखां नदी के इधर भकर की तरफ बढे। इस तरहसे दोनों तरफ से दाराशिकोह उसको घेरलें।

सफशिकनखां तो दूसरे दिन शेखमीर को छोडकर भकर गया और शेखमीर दो दिन में नदी से उतर कर ५ सफ़र (कार्तिक सुदि ७। २२ अक्टूबर) को सक्खर से १२ कोस पर पहुंचा ६ (कार्तिक सुदि ८। २३ अक्टूबर) को लश-कर का वहीं मुकाम रहा। सफशिकनखां ३ दिन पहिले सक्खर में पहुंचगया। जब अगले दिन वहांसे आगे चला तो सुना कि दाराशिकोह सब बोझ भार भक्कर के किले में छोड कर मोहर्रम को चांदरात (कातिकसुदि १। २७ अक्तूबर) को आगे चल दिया है, उसका बाक़ी ख़ज़ाना और असबाब तो नवों में है और आप जंगल के रस्ते से जारहा है। उसके उमदा नौकरों से दाऊदखां वगैरह उसे छोडगये हैं

और वह तो सक्खर से कंधार को जाना चाहताथा मगर साथवालों के अलग होजाने और जनानों के राजी न होने से उसने ठट्ठे को जाने का इरादा किया है।

सफशिकन खां आअजखां को कुछ आदमियों के साथ भक्कर में छोडकर सेवस्थान को गया। जहांके किलेदार मोहम्मद, सालह, तरखां ने उसको लिखा कि दाराशिकोह किले से १ कोस तक आपहुंचा है तुम जल्दी आओ और उसके खजाने की नावों को रोकलो।

सफशिकनखां ने अपने जमाई मोहम्मदमासूम को जब ही कुछ लशकर से नदीके किनारे पर मोरचे लगाने को भेजदिया और आधी रातको वह भी दाराशिकोह के लशकर के सामने होकर ३ कोसपर नावों के इन्तज़ार में जाबैठा और पानी में उतरकर दुशमनोंपर जानेका इरादा करके मोहम्मदसालह को भी उधर से नावें भेजने को कहलाया। उसने कहा कि इधर से नदी की गहराई कमरतक है और नावें इधर से ही उतरें गी। सफ़शिकनखां यह सुनकर पानी में नहीं उतरा तडके ही नदी के उसपार गर्द उडने से मालूम हुआ कि दाराशिकोह कूच करगया और दुशमन नावों को भी उधरसे ही लेगये तो फ़तह जो होनेवाली थी मोहम्मदसालह-की उलटी समझ से नहीं हुई।

दाराशिकोह सेवस्थान की घाटी से उतरा सफ़शिकनखां उसी किनारे से दो मंजिल उसके पीछे गया इधर से शेखमीर ने पहुंचकर कहलाया कि अब सलाह यही है कि पानीसे उतरकर इधर आजाओ तो दोनों मिलकर पीछा करें।

सफशिकनखां नदीसे उतरा। तब यह खबर पहुंची कि दाराशिकोह ठट्ठे में पहुंच कर गुजरातको जाने वाला है। सफशिकनखां शेखमीर से आगे बढकर ठट्ठे की नदी तक जापहुंचा उधर से दाराशिकोह कूच करके गुजरात को रवाने होगया, सफ़शिकनखां भी ७ दिनमें पुल बांध कर दरिया से उतरा, इतने में बादशाह का हुक्म शेखमीर दिलेर खां और सफशिकनखां के नाम गया कि दाराशिकोह का पीछा छोडकर हजूर में पहुंचे।

सन् १०६९ हि॰ संवत् १७१५ सन् १६५९ ई॰
औरंगज़ेब आगरेके पास रूपवासमें.
बादशाहका इलाहाबादसे लौटना।

जब बादशाह को दाराशिकोहके गुजरात में जाने की खबर पहुंची तो वह इलाहाबाद से लौट पडे। १ जमादिउलअव्वल (माहसुदि २ । १४ जनवरी) को गंगाके किनारे पर इलाहाबाद के फतह होने की खबर बादशाहजादे मोहम्मद सुलतान की अरजी से मालूम हुई। दूसरे दिन महाराज जसवंतसिंह को सजादेने के लिये जो दाराशिकोह से जा मिलने के इरादे में था घाटमपुर की मंजिल से मोहम्मदअमीनखां मीरबखशी को ९ हजार सवारों के साथ उसपर भेजा फिर आप भी जसवंतसिंह और दाराशिकोह को हराने की जल्दीसे आगरे में न जाकर बाग नूरमंजिल से ही अजमेर को रवाने हुए। २९ (फागुनवदि ११। ७ फरवरी) को रूपवास से कूचहुआ रस्ते में शेखमीर और दिलेरखां भी आमिले।

लशकर के लौट आने से जो दाराशिकोह को सुभीता मिला तो वह जंगल के रस्ते से कच्छ में पहुंचा और वहां से गुजरात में आया दिलरसबानूबेगम का बाप शाहनवाजखां सफवी दानाहोकर भी हिम्मत हार कर उस से मिलगया।

दाराशिकोह ने १ महीना ७ दिन गुजरात में रहकर २२ हजार सवार जमा करलिये १ जमादिउलआखिर (फागुनसुदि २। १२ फरवरी) को वहां से निकला रस्ते में जसवंतसिंह की लिखावटों के पहुंचने से उसका अजमेर आनेका हौसला बढ़गया था।

सन् १०६९ हि॰ संवत् १७१५ सन् १६५९ ई॰
औरंगज़ेब हिंडोन और टोडेमें.

७ जमादिउलआखिर (फागुनसुदि ८। १९ फरवरी) को बादशाह के डेरे हिंडोन में हुए वहां से टोडे तक फिर कहीं ठहरने का काम नहीं पडा।

१९ (चैतवदि ९। २७ फरवरी) को शेखमीर का भाई अमीरखां मुरादबखश को दिल्ली के किले से गवालियर के किले में पहुंचाकर हाजिर होगया।

---

(१) यह बादशाह की बेगम थी.

सन् १०६९ हि, संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.
औरंगजेब रामसरमें.
दाराशिकोह से लड़ाई और उसका भागना।

दाराशिकोह अजमेर में पहुंचकर लडने को तैयार था २४ जमादिउलआखिर (चैतबदि १० । ८ मार्च) को बादशाही लशकर भी ६ कोस पर रामसर के तलाब के पास उतरा और लडाई के वास्ते लाम बांधने का हुक्म हुआ। दाराशिकोह जसवंतसिंह के पहुंचने के बलपर कूदता था मगर राजा जैसिंह ने जसवंतसिंह पर रहम करके बादशाह से उसके कसूरों की माफ़ी चाही और बादशाह के क़बूल करलेने पर उसको माफ़ीकी बधाई और दाराशिकोहसे नहीं मिलनेकी ताकीद लिखी

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.
औरंगज़ेब गांवदेराईमें.

जसवंतसिंह को जब यह खुशखबरी पहुंची तो वह जोधपुर से २० कोस पर था वहीं से लौट गया, फिर दाराशिकोह ने उस के आने के वास्ते बहुत ही खुशामद की और सिपहरशिकोह को भी भेजा मगर कुछ फायदा नहुआ। इतनेही में बादशाही लशकर अजमेर के पास जापहुंचा और दाराशिकोह को भी लडनापडा, मगर मैदान में आने की ताकत नहांने से अजमेर के पहाडों की चौडाई पर मोरचे लगाये गये। बादशाह के डेरे गांव देराई में हुए जहां से अजमेर३ कोस है, मगर दाराशिकोह का डेरा थोडी ही दूर था।

दूसरे दिन बादशाह का हुक्म तोपखाना बढाने और गोले मारने का हुआ। उधर से तोपें और बदूकें चलने लगीं। उसदिन उसरात और दूसरे दिन तीसरे पहर तक लड़ाई की आग भड़कती रही जिस में शाहनवाज़खां सफ़वी मोहम्मदशरीफ़ खां, मीरबख़शी और दूसरे बड़े बड़े सरदार दाराशिकोह के मारेगये इधर से शेख मीर छाती में गोली लगने से काम आया मगर मीरहाशम जो हाथी के हौदे में उसके पीछे बैठा था उस को गोद में लेकर संभाले रहा।

---

(१) इस मामिले का पूरा हाल हम महाराज जसवंतसिंह के जीवनचरित्र में लिख चुके हैं।

आखिर दाराशिकोह बादशाही लशकर की यह बहादुरी देखकर गुजरात को चलदिया बादशाह की फतह होगई।

बादशाहने खुदाका शुक्र करके कहा कि उसने पेगम्बर का दीन चलाने और नास्तिकमतके मिटाने के लिये ऐसी बड़ी फतह मुझको बखशी।

दूसरे दिन चांदरात (चैतसुदि १ । १३ मार्च) को राजा जैसिंह और बहादुरखां दाराशिकोह के पीछे भेजगये।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब अजमेरमें.

बादशाहका अजमेरसे लौटना।

बादशाह इस तरह निश्चिन्त होकर ४ रजब (चैतसुदि ९ सं० १७१६ । १८ मार्च) को अजमेर से दिल्ली की तरफ़ लौटे।

शाहजादे मोहम्मद सुलतान की अरजी पहुंची कि शाहशुजाअ मुंगेर में कुछ दिनों रहना चाहता था मगर बादशाही लशकर के जापहुंचने से डर कर जहांगीर नगर को चलागया और मुअज्जम खां मुंगेर के किले में दाखिल हुआ।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१६ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब फ़तहपुर और खिज़राबादमें.

२४ रजब (बैशाख बदि ११ । ८ अप्रेल) को बादशाह की सवारी फ़तहपुर में पहुंची और ६ शाबान (बैशाख सुदि ८ । १९ अप्रेल) को दिल्ली की तरफ रवाने हुई। बादशाहज़ादे मोहम्मद सुलतान की अरज़ी आई जिसमें लिखा था कि शाहशुजा अपहिले तो जहांगीर नगर को गयाथा मगर जब बादशाही लशकर नजदीक पहुंचा तो वह नावों में बैठकर चलदिया और जहांगीर नगर बादशाही बन्दों के कब्जे में आगया।

दाराशिकोह के तरफ़ की यह ख़बर आई कि वह अजमेर से गुजरात में पहुंचकर फिर क़ब्ज़ा किया चाहता था मगर सरदार खां ने जो उस सूबे के मददगारों में से था उसको अहमदाबाद में घुसने नहीं दिया तब वह शहर से हटकर कानजी कोली के पास चला गया।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१६ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब दिल्लीमें.

१९ (जेठबदि ६ । २ मई) को बादशाह खि़ज़राबाद पहुँच कर ११ दिन तक वहां रहे चांदरात (जेठ सुदि १ । १२ मई) को दिल्ली के किले में पहुंचे पंजाब जाने की जलदी से तख़्त पर बैठने की खुशी की कुछ धूमधाम न होसकी थी इसलिये अब उसकी तैयारी करने का हुक्म दिया गया ।

दूसरा जलूसी साल ।

२४ रमज़ान २९ खुरदाद (आसाढ बदि ११ । ९ जून) इतवार को बादशाह बड़े ठाट और ठस्से से तख़्त पर बैठे । उस दिन उन की उमर शमसीसाल (सौरबर्षों) के हिसाब से ४० बर्ष ७ महीने १३ दिन की और क़मरी साल (चन्द्रबर्षों) के लेख से ४१ बर्ष २ महीने १२ दिन की हुई थी, जब खुतबा[2] पढ़ा गया और उसमें उनका नाम आया तो पढ़नेवाले पर हरतरफ़ से रुपया और अशरफ़ियों का मेह बरसगया । पहिले सिक्के में एक तरफ़ को मुसलमानी कलमा खोदाजाता था बादशाह ने हाथ पैरों के नीचे आजाने में बेअदबी होने से उसको बन्द करदिया और उसकी जगह उस तरफ़ अपना नाम और दूसरी तरफ़ सन् जलूस और टकसाल का मुक़ाम खुदवाया । तुग़रा (मुहरछाप) में अबुल मुज़फ़्फ़र मुई उद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह ग़ाजी रखागया । इसी मुहर-से सब सूबो में जिलूस की खुशख़बरी के फ़रमान जारी हुए, बादशाहजादों बेगमों अमीरों और सब नोकरों को बड़ी बड़ी बख़शिशें और पदबियें मिलीं । शायरों मोलवियों और गवइयों वग़ेरहों ने भी खूबखूब इनाम पाये । यह खुशीका जिलूस रमजान के महीने में हुआ था इसलिये जिलूसी बर्षोंका शुरू १ रमज़ान से रक्खा-

---

१—कलकत्ते की प्रति में १० महीने २ दिन लिखे हैं मगर दोनों प्रतियों में गलती है सही १० महीने १० दिन हैं क्यौंकि औरंगजेब का जन्म १५ ज़ीक़ाद सन् १०२७ को हुआ था। २—यह भी १ मुसलमानी दस्तूर है कि जब नया बादशाह तख़्त पर बैठता है तो उसके नामका खुतबा (एड्रेस) पढाजाता है जा फिर जुमे (शुक्रवार) और ईद बकरीद की नमाज़ के पीछे मसजिदोंमें जारी होजाते हैं ।

गया और नोरोज़ का जशन (जलसा) भी जो पहिले ईरानी बादशाह जमशेद और किसरा के कायदे से फ़ारसी महीने फरवरदीन की १ तारीख़ को होता था अब से अरबी महीने रमज़ान की पहिली तारीख़ को होना ठहरा। नशे की चीजों को दूर करदेने के लिये मुल्ला "एवजवजीह" मुक़र्रर कियागया और १९००० सालाने के बदले उसको १ हज़ारी १०० सवारों का मनसब दिया गया।

बंगाले के अखबार से मालुम हुआ कि शाहजादा मोहम्मदसुल्तान शाहशुजाअ के बहकाने से २९ रमजान (आसाढ़सुदि १। १० जून) को नाव में बैठकर उस के पास चलागया।

२१ शव्वाल (सावनबदि ९। २ जुलाई) को दाराशिकोह और सिपहेर शिकोह के पकड़ेजाने की खुशखबरी पहुंची, जमीनदावर के ज़मीदार मलिकजीवन ने दोनों को पकड़कर बहादुरखां के हवाले करदिया था।

बादशाह ने शाहज़ादा मोअज्जम की जगह अमीरुलउमरा को दक्खन की सूबेदारी पर भेजा और आकिलखां को बदलकर अकीदतखां को औरंगाबाद का किला सौंपा। आकिलखां और वजीरखां को शाहजादे के साथ हजूर में आने का हुक्म लिखा गया।

उसी दिन शाहज़ादे आज़म को भी छठा वर्ष लगा था इसलिये उसको जड़ाऊ सरपेच तलवार मोतियों की माला और ९ घोड़े इनायत हुए।

मलिकजीवन को अच्छी खिदमत करने के इनाम में ख़िलअत हजारी २०० सवार का मनसब और बख़्तयारखां का ख़िताब मिला।

क़ाबिलखां मुनशी ने घर बैठने का इरादा किया था इसलिये उसका ५०००) सालाना होगया।

राजा राजरूप को श्रीनगर के पहाड़ों में जाने की छुट्टी मिली सो वहां के जमींदार पृथ्वीपति को डरा धमकाकर तथा फुसलाकर सुलेमांशिकोह को उसकी पनाह में से निकाल लावे।

---

१ उत्सव। २ कलकत्ते की प्रति में २७ है।

बंगाले के अखबार से अर्ज़हुई कि शाहशुजाअ ने अकबर नगर से टांडे को जातेहुए अलावरदीखां की मनसा अलग होजाने की मालूम करके उसको और उस के बेटे से फुल्लाह को मरवा डाला।

बादशाह ने किले आगरे के गिर्द शेरहाजी नाम परकोटे के बनाने का हुक्म दिया जो ३ वर्ष में एतबारखां के अहतेमाम से पूरा हुआ।

२३ जीकाद (भादों बदि १० । ३ अगस्त) को बादशाह का क़मरी तुला-दान गरीबों को बांटा गया। सब छोटे बड़े लोगों को खिलअत, इजाफ़े, मनसब और इनाम में जवाहर हाथी घोडे मिले।

बहादुरखां दाराशिकोह को लेकर आया जो खिज़राबाद में रक्खागया २१ जिल-हज्ज (आसोजबदि ९ । ३१ अगस्त) गुरुवार की रात को उसकी जिंदगी का चिराग़ ठंडा किया गया। लाश हुमायूं बादशाह के मक़बरे में गाड़ी गई, सेफ़खां को हुक्म हुवा कि सिपरहरशिकोह को गवालियर के किले में पहुंचाकर आगरे में लौटआवे और वहां की फौजदारी का काम करे।

राजा जैसिंह जो बहादुरखां से पीछे रहगया था दरगाह में हाजिर आया बाद-शाह ने उस पर बडी महरबानी की उसके और बहादुरखां के बहुत से घोडे दौड़ धूप में मरगये थे इसलिये २०० घोडे उस को और १०० बहादुरखां को इनायत हुए।

इन्हीं दिनों में आम महरबानी से राहदारी का महसूल नाज और तमाम चीजों-पर से हमेशे के वास्ते उठादियागया। इसके लिये २५ लाख रुपये साल तो बादशाही खालसे में ही बख्शे गये जो कुछ मुल्कों में से छोड़ गये थे उनका तो कुछ पार नहीं था।

जुलफ़िकार खां करांकौनलू मरगया उसके बेटे असदखां और जमाई नामदारखां को मातमी के खिलअत मिले।

---

१ प्रयत्न। २ चान्द्रमासीय वर्षगांठ का तुला दान। ३ तुर्कमानों की एक जाति का नाम।

मोअज्जमखां ने करनाटक की विलायत कुतुबुलमुल्क से छीन ली थी वह उसके फिर लेने की फिक्र में लगारहता था इसलिये बादशाह ने मीरअहम्मदखवाफ़ी को मुस्तफ़खां का खिताब देकर उस मुल्क के बंदोबस्त पर भेजा।

जमीनदावर के ज़मींदार बखतियार खां को घर जाने की रुखसत मिली।

काबुल के अखबार से मालूम हुआ कि नुजहतखां के पोते शेरुल्लाह ने अपने बाप से आदतखां को जमधर मारकर मारडाला और महाबतखां सूबेदार ने उसको पकड़रक्खा है, सआदतखां की जगह शमशेरखां काबुल की किलेदारी पर भेजागया।

तूरान के अखबार में लिखाआया कि बलख के हाकिम सुबहानकुलीखां और उसके भाई कासिम सुल्तान में जो हिसार का हाकिम था, बिगाड़ होकर सुबहान-कुली खां ने कासिम को दग़ा से मारडाला।

शाहज़ादे मोहम्मदसुल्तान के शाहशुजा की तरफ चलेजाने से बंगाले के बाद-शाही लशकर को बड़ा धक्का लगाथा। मगर मोअज्जमखां के वहां रहने से सब तरह की तसल्ली थी। तो भी बादशाह ४१ वें शमसी साल लगने का तुलादान करके (२०) रबीउलअव्वल सन् १०७० (पोस बदि ६। २९ नवम्बर) को गंगाकी तरफ रवाने हुए।

राजा जसवंतसिंह को महाराजा का खिताब बहाल होकर कसूरोंकी माफी मिली।

६ लाख ३० हजार रुपया की जिनस मक्के और मदीने के शरीफों (महं-तों) को भेजी गई।

सन् १०७० हि. संवत् १७१६ सन् १६६०
औरंगजेब गढमुक्तेश्वर और शमसाबादमें.

१९ रबीउलअव्वल (पौसबदि ९। २४ नवंबर) को गढ मुक्तेश्वर में डेरे हुए।

२२ (पौसवदि ८। २७ नवम्बर) को शाहज़ादा मोहम्मद मोअज्जम और वज़ीरखां दक्षिण से आये।

१५ रबीउलसानी (माहबद २। २० दिसम्बर) को शाहज़ादे मोअज्जम की शादी खुरासान की एक शरीफ लड़की से हुई।

---

(१) औरमासकी वर्ष गा०। (२) कल्पफ्च का आवर्त ८ रबीउलअव्वल मगसर सुदि १०। १३ नवम्बर। ३ कुलीन।

४ जमादिउलअव्वल (माहसुदि ६ । ७ जनवरी १६६०ई) को गढमुक्तेश्वर से इलहाबाद को कूचहुआ ।

इन्हीं दिनों में मोअज्जमखां की अरज़ी आई कि गंगा से उतरकर शाहशुजाअ की मुहिम पूरी करने में लगाहुआहूं और शाहशुजाअ जो टांडे में ठहराहुआथा जहांगीर-नगर को चलागया है ।

सन् १०७० हि. संवत १७१७ सन् १६६० ई.

औरंगजेब दिल्लीमें.

बादशाह की असली मनसा इस दौरे से बंगाले के लशकर को मदद पहुंचाने की थी अब जो इस अरज़ी से तसल्ली होगई तो शमशाबाद से लौटकर ११ जमादिउलआखिर (फागुण सुदि १२ । १३ फ़रवरी) को दिल्लीके किले में दाखिल होगये और नमाज़ पढ़नेके लिये अपने महल के पास १ छोटी सी मसजिद सफ़ेद पत्थर पर पच्चीकारी के काम की बनवाई जो ५ वर्षमें १ लाख २५ हज़ार के खर्च से तैयार हुई ।

बंगाले के अखबार से अरज हुई कि जब शाहशुजाअ जहांगीर नगरसे भागा तो शाहजादा मोहम्मद सुलतान अपनी करनीसे पछताकर जैसा गया था वैसाही अकबर नगरमें इसलामखां के पास चलाआया । बादशाहने हुक्मदिया कि मोहम्मद मीरक गुर्जबरदार तो नादरी का खिलअत उसके वास्ते लेजावे और फिदाईखां जाकर उसको हजूरमें लावे, जब शाहजादा दिल्ली के करीब पहुंचा तो २५ शाबान (जेठबदि १२ । २६ अप्रेल) को अलायारखां पेशवाई करके उसको जमुना-के जलमार्ग से सलीमगढ में पहुंचाआया और मोतमिदखां को उसकी निगह-बानी सौंपी गई ।

तीसरा आलमगीरी सन् ।

रमजान सन् १०७० (जेठसुदि २ । १ मई) को तीसरा वर्ष लगा ४ (जेठ सुदि ५ । ४ मई) को खुशी का जशन हुआ अमीरोंके मनसब बढे ।

बंगाले से खबर आई कि शाहशुजाअ जहांगीर नगरमें भी न ठहरसका ६ रमजान (जेठ सुदि ७ । ६ मई) को रखंग[1] की विलायत में भागगया मोअज्जमखां जहांगीर नगर में दाखिल हुआ ।

---

(१) अराकान ।

२४ (द्वितीय जेठ बदि ११। २४ मई) से जो दूसरे जलूस का दिन था ईद (द्वि. जेठसुदि ३। ३१ मई) तक खुशी की मजलिसें और बख़शिशें होती रहीं। ईदके दिन बादशाह ने ईदगाह में जाकर नमाज पढी ईदसे दो दिन पीछे तक भी मजलिसें हुईं।

बादशाही लशकर के पीछा करनेसे शाहशुजा का हाल यहां तक पतला होगया था कि सैयद आलम बारहके १० सैयदों और सैयद कुली उजबक १२ मुगलों और कई दूसरे आदमियों के सिवाय और कोई उसके पास नहीं रहा था। वह भागता भटकता विकट जंगलों और गहरी दरियाओं को पार करता हुआ दुनिया भर की बस्तियों से दिल उठा कर रखंग के टापू में पहुंचा और वहां के जंगली आदमियों और जानवरों में रहने लगा उसका जो परिणामहुआ वह आगे लिखा जावेगा।

१७ जीक़ाद (सावन बदि ५। १६ जुलाई) को ४४ वीं कमरी सालग्रह का तुलादान हुआ। बादशाहजादों और आमलोगों पर बड़ी बड़ी इनायतें हुईं।

मोअज्जमखां सूबेदार बंगाले को खानखानां का बडा खिताब सिपहसालारी का ओहदा ७ हजारी ७ हजार सवार। दुअस्ये तिअस्ये का मनसब मिला। जडाऊ तलवार समेत खिलअत भी शाहशुजाअ को निकाल देने के इनाम में उसके वास्ते भेजा, गया बंगाले के लशकर में जो अमीर थे और जो हजूरमें हाजिर थे या सूबों में सूबेदार थे उन सब को भी खिलअत और इनाम मिले।

निजावतखां पर एक कसूर से खफ़गी थी इस सबब से वह बग़ैर हथियार के दरबार में आता था सो उसको तलवार इनायत हुई।

काशगर के हाकिम अबदुल्लाहखांका भाई मनसूर और उसका भतीजा महदी दोनों भागकर बदखशां के रस्ते से हिन्दुस्तान में आये और बादशाह की ख़िदमत में हाजिर हुये।

बेगमसाहिब दूसरी बेगमों और बादशाहजादों की नजरों के जवाहर और जडाऊ गहने बादशाह की नज़र से गुजरे।

---

(१) २ घोडोंकी तनख्वाह पानेवाला सवार (२) ३ घोडोंकी तनख्वाह पानेवाला सवार।

बक़राईद (सावन सुदि २। २९ जुलाई) के दिन बहुत से आदमियों को बख़्शिशें मिलीं।

रावकरण भुरटिया दाराशिकोह के बहकाने से बिना रुखसत ही दक्खन से अपने वतन को चलागया था इस लिये अमीरखां को हुक्म हुआ कि जाकर उस को सजादे और जो माफी चाहे तो अपने साथ ले आवे, अमीरखां जब बीकानेर के पास पहुंचा तो रावकरन उससे मिला और उसके साथ दरगाह में आया अमीरखां की सिफ़ारिश से उस के क़ुसूर बखशेगये।

सन १०७१।

७ मोहर्रम सन् १०७१ (भादों सुदि ९। ३ सितम्बर) को इख़्लासखां शाहसुजाअ के खजाने जवाहरखांने और जनाने को लेकर बंगालेसे आया।

इन्हीं दिनों कोकन में चाकने का किला दक्खिन के सूबेदार अमीरुलउमरा की कोशिश से फ़तह हुआ क्योंकि उसको सेवा के निकालने और उसके किलों के फतह करने का हुक्म दियागयाथा जो उसने बीजापुर में गदर होने और वहां के बड़े अमीर अफ़ज़लखां को मरवाडाल ने से दबालिये थे अमीरुलउमरा ने कई जगह उसके आदमियों को भी पूरी २ सजा देकर शाही थाने बैठादिये।

४३ वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ।

इन्हींदिनों में परेंडा का किला भी लड़ाई के बिना ही फतह होगया वहां जो गालिब नाम किलेदार आदिलखां की तर्फ़ से था उसने बादशाह की नौकरी करने का इरादा करके अमीरुउमरा के पास किला सौंप देने का संदेसा भेजा, उसने मुख़तारखां को वहां की किलेदारी पर भेजकर ग़ालिब को अपने पास बुलालिया बादशाह ने गालिब के वास्ते खान का खिताब चारहजारी मनसब खिलअत और इनाम भेजा।

श्रीनगर के पहाड़ों के राजा पृथ्वीसिंह ने कसूर माफ कराने और सुलेमांशिकोह के सौंप देने का ख़त राजा जैसिंह को लिखा। राजा की अरज़ पर बादशाह ने उसके कंवर रामसिंह को सुलेमांनशिकोह के लानेके लिये भेजा। उसने ९ जमादिउल-अव्वल (पोस सुदि ७। २८ दिसंबर) को दिल्ली में लाकर सलीमगढ में सौंप दिया।

२४ (माह बदि ११। १६ जनवरी) को मुरतिजा खां उसको और मोहम्मद सुलतान को गवालियर के किले में पहुंचा आया, मोतमदखां किलेदार हुआ।

सूरतबंदर कें अखबार से अरज़ हुई कि बसेरे के हाकिम हुसेनपाशा ने बादशाह के जिलूस की मुबारकबादी की अरजी और अरबी घोडों की नजर कासिम आका-के साथ भेजी है, बंदरसूरत के मुत्सद्दी मुसतफ़ाखां को हुक्म लिखागया कि ४०००) देकर कासिम को हजूर में रवाने करे।

इसी अरसे में बलख के हाकिम सुबहानकुलीखां का वकील खत और तूरान के तुहफ़े लेकर आया मगर बीमार होने से मरगया उसके साथी खिलअत और २००००) पाकर रुखसत हुए।

इस वर्ष अकसर सूबों में काल पडाहुआ था इस लिये हुक्म हुआ कि मामूली लंगरखानों के सिवाय १० लंगरखाने दिल्ली में और १२ आसपास के परगनों में गरीबों के वास्ते खोलेजावें ऐसेही लंगरखाने लाहौर में भी खोले गये और नकद रुपया जो मोहर्रम, रबीउलअव्वल, रज्जब, शाबान, रमजान, और जिलहज्ज के महीनों में बांटा जाता था वह इस साल दूना करदिया गया और हेजारी तक के अमीरों को भी अपनी २ तर्फ से खैरात जारी करने का हुक्म हुआ जबतक कालकी तकलीफ न मिटी यह मदद जारी रही।

चौथा जलूसी सन्।

१ रमज़ान (वैसाख सुदि ३। २१ अप्रेल) से चौथा जलूसी सन् लगा। मजलिसें जो २४ रमजान (जेठ बदि ११। १४ मई) से पिछली सालमें शुरू हुई थीं रोजों के सबब से १ शव्वाल (जेठ सुदि २। २० मई) से १० दिन तक मुकर्रर की गई।

बादशाहजादे मोहम्मद मुअज्जम के लडका हुआ बादशाह ने मोअज्जुद्दीन उसका नाम रक्खा।

---

(१) बसरा अरब में १ बंदर है जहां रूमके सुलतानकी अमलदारी जब भी थी और अब भी है। (२) हज़ारीमनसबके अमीरों।

ईरानके बादशाह शाहशुजा का एलची बबादकबेग ३० शाबान (बैसाख सुदि २ । २० अप्रेल) को मुलतान में पहुंचा था, वहां के सूबेदार तरबीयतखां ने जिया-फतें करके ५०००) और ९ थान कपडों के उसे दिये । लाहौर में खलीलुल्लाहखां ने अच्छी दावतें दीं २००००) मनिाकार खंजर शमशेर और ७ थान हिन्दुस्तान के उमदा कपड़े भेंट किये । जब यह सरायबावली में पहुंचा तो बादशाह ने अपना झूटा खाना और ३ शव्वाल (जेठसुदि ४ । २२ मई) को आकर जमीन चूम-ने का हुक्म भेजा ।

१ शव्वाल (जेठ सुदि २ । २० मई) से जुलूसी महफ़िलें शुरु हुईं बादशाह ने ईद की नमाज पढकर बादशाहजादों अमीरों राजों महाराजों और सरदारोंपर उनकी उमेद से जियादा इनायतें कीं ।

कासिमआका रूमीने हाजिर होकर ५ अरबी घोडे हुसेन पाशा की तरफ से और कई घोडे और गुर्जी[1] गुलाम अपनी तर्फ से नजर किये खिलअत और ५०००) उसको मिले ।

३ (जेठ सुदि ४ । २२ मई) को अबदुल्लाहखां सफीखां और मुलतिफिख़ां शहर के बाहर जाकर ईरान के एलची को दरगाह में लाये । उसने आदाब बजा-कर शाह का खत जो तख़्तनशीनी की मुबारकबाद में था बादशाह की नजर से गुजराना ।खिलअत जीगा जड़ाऊ खंजर;मजलिसीअरगजा प्याला सोनेका ख्वांन[3]-चा पान पानदान और सोने का ख्वांन[4] इनायत हुआ, रुस्तमखां की हवेली रहने के वास्ते मुकर्रर हुई और मीरअजीज बदख़शी महमानदारी पर तइनात हुआ ।

७ शव्वाल (जेठ सुदि ८ । २६ मई) को एलचीने शाह की सौगातें बादशाह को दिखाईं जिनमें ६६ घोड़े और १ मोती ३७ कीरात (२४२ रत्तीभर) का भी था. कुल सौगात ४ लाख २२ हजार रुपये की आंकी गई ।

१९ जीकाद (सावन बदि ६ । ७ जोलाई) को ४९ वें कमरीवर्ष लगने का तुलादान और दरबार हुआ हजूर और दूर के सब छोटे बडे अपनी मुरा-दों को पहुंचे ।

---

(१) गुर्जिस्तानके रहने वाले । (२) कलकत्ते की प्रति में असदखां है । (३) छोटाथाल (४) बड़ाथाल ।

१० जिलहिज्जे (सावन सुदि ११ । २७ जोलाई) को ईद की खुशी और ईरानी एलची की रुखसत हुई १ लाख रुपया खिलअत, मीनाकार खंजर मोतियों की लड़ीसमेत सोने की जीन, और लगाम का घोड़ा सोने की जीन चांदी के साज और झूल का हाथी और १ हाथी दरयाई, और पालकी सोने के समान की, उसको इनायतहुई, खत का जवाब पीछे से भेजना ठहरा एलची को अव्वल से आखिर तक ५ लाख और उसके साथियों को ३६०००) मिले थे।

. आकिलखां ने घरमें बैठने की अरज की उसको ९०००) सालाना मुकर्रर होगया ।

इन्हीं दिनों में ४४ वें शमसी साल लगने का तुलादान और दरबार हुआ ।

हुसेन पाशा का वकील कासिमआका १००००) और खिलअत पाकर रुखसत हुआ. उसके साथवालों को १०००)मिला और एक जड़ाऊ तलवार हुसेनपाशा के वास्ते भेजी गई ।

सन् १०७२ (सं० १७१८)

४ रबीउलसानी सन् १०७२ (मगसर सुदि ६ । १७ नवम्बर) को बुखारा के खान अबदुलअजीजखां का एलची ख्वाजाखाबंद महमूद दिल्ली के पास पहुंचा सफ़ीखां और किबादखां पेशवाई करके उसको दरगाह में लाये । उसने खत और सौगात के तुरकी कदमबाज घोडे ऊंट ऊंटनियां और दूसरे तुहफे नजर किये। जिनमें से एक लाल की कीमत २४०००) की ठहरी । बादशाहने उसको खिलअत मोतियों की लड़ीका खंजर २००००) और रहने के वास्ते मकान इनायत किया ।

इन्हीं दिनोंमें राजा रूपसिंह की बेटी जिसे मुसलमान करके महल में तालीम दीगई थी शाहजादे मोहम्मद मुअज्जम से ब्याही गई । इस शादी की महफिलें बड़ी धूमधाम से हुई थीं ।

पटने के सूबेदार दाऊदखां ने बदोऊं की बलायत जो सूबे बिहार के इलाकोंमें से थी वडी २ लडाइयां लडकर फतह की थी इसलिये उसके वास्ते खिलअत भेजा गया ।

---

(१) पलामू ।

सैयद अमीरखां महाबतखां के बदले जाने से काबुलका सूबेदार हुआ।

१ रजब (फागुन सुदि ३।११ फरवरी सं. १६६२) को फाजिलखां ने आगरे से पहुंचकर कुछ जवाहरात और जडाऊ सामान जो आलाहजरत (शाहजहां) ने भेजे थे नजर किये।

२ (फागन सुदि ४। १२ फरवरी) को अरज हुई कि लाहौर का सूबेदार खलीलुल्लहखां जो बीमार होकर दिल्लीमें आया था मरगया। बादशाह उसके मकान-पर गये। मीरखां, रूहुल्लाहखां और अजीजुल्लाहखां उसके बेटों और दूसरे भाई-बंदों को खिलअत देआये। मुमताज, ज़मानी (ताजबीबी) की बहन मलिकाबानू की बेटी हमीदाबानू उसकी बीबी थी इसलिये उसका ५० हजार रुपये साला-ना मुकर्रर होगया।

६ रजब (फागुन सुदि ९। १६ फरवरी) को शाहशादे मोहम्मद अकबर की मुसलमानी हुई।

बुखारा के ड्योढीदार ख्वाजा अहमद को खिलअत मोतियों की लड़ी का जडाऊ खंजर और ३० हजार रुपया मिला और जानेकी इजाजत हुई अव्वल से आखिर तक १ लाख २० हजार रुपया उसे पहुंचा था।

१ शाबान (चैत्र सुदि ३। १२ मार्च) को शुजाअ के हाथियों में से ८० और पलामू की लूटके २ हाथी खानखाना के भेजे हुए बादशाह की नजर से गुजरे।

बादशाह की शिकारोंमें इस साल १५० कुलंग बाजों से पकडाये गये थे और कमरगे (हाके) का शिकार भी हुआ था। जिसमें ३५५ हरन जालसे पकड़े गये ७८ बादशाह के और ४७ दूसरे आदमियों के हाथसे जिनको शिकार की छूट होगई थी मारे गये। बाकी को छोडदेने का हुक्म हुआ यह भी अर्ज हुई कि हरन तो बहुतसे घेरे गये थे मगर सब भड़ककर हांकनेवालोंपर दौड़पड़े १०७० हरन तो ५ आदमियों को (जिन में से २ तो वहीं मर गये) सींग मारकर निकल गये।

उन दिनोंमें यह १ अजब बात बादशाहसे अर्ज हुई कि कुछ लड़के क़सबे सोनपतमें बादशाह और वजीर का खेल खेलरहे थे दो आदमी चोर निकले कोत-

वाल उनको हाकिम के प .... उसने सजादेने को इशारा किया कोतवाल के हाथ में एक लकड़ी ... नादान ने उनके शिरपर ऐसी मार मारी कि दोनों मरगये और वह खेल एक आफत होगया ।

कूचबिहार और आसामकी फतह ।

जब सन् १०६७ के अखीर (संवत् १७१७ के बीच) में आलाहजरत (शाहजहां) के बीमार होजाने से तमाम शरहदोंपर गड़बड़ मचगई थी तो कूचबिहार का जमीदार प्रेमनारायण बादशाही कबजे की बलायत कामरूप को दबाबैठा । उधर से आसाम के राजा विजेयसिंहने भी जो अपनी वलायत को बादशाही लशकरों की चढाईयों से बचाये रखता था एक बडा लशकर खुशकी के रस्ते से कामरूप को भेजा । खानखाना इन दोनों के निकालने की तैयारी करके बादशाह से मंजूरी मंगवाकर १८ रबीउलअव्वल (मगसर बदि ५ । १ नवम्बर) को खिज़रपुरसे उधर गया.(२७ मगसर बदि १४ । १० नवम्बर) को कूच बिहार पहुँचा जिसका नाम आलमगीरनगर रखकर २८ (मगसरबदि ३० । ११ नवम्बर) को घोडा घाट के रस्ते से आशामपर चढा ५ महीने की महनत के पीछे ६ शाबान (चैत सुदि ८ । १७ मार्च) को आशाम का राजस्थान गिरगांव फतह हुआ । बहुतसी लूट हाथ लगी, जब इस बडी फतह की खबर ख़ानखाना की अरजी से बादशाह को मालूम हुई तो महरवानी से उसके बेटे मोहम्मदअमीन को जो हजूर में था खिलअत इनायत हुआ और उसके वास्ते भी शाबांशी का फरमान और खासा खिलअत भेजा गया ।

इस चढ़ाई की लूट और आशाम की अनोखी चीजों और बातों का पूरा २हाल आलमगीरनामे में लिखाहै ।

पांचवां आलमगीरी सन् ।

१ रमजान (वैशाख सुदि २ । १० अप्रेल) से पांचवां जुलूसी सन् लगा । मामूली महफ़िलों और आतिशबाजी की तैयारी होने लगी बादशाहने ईद की

---

१) कलकत्ते की प्रति में जयध्वजसिंह है ।

नमाज पढकर हाजिर और गैरहाजिर अमीरों को जो सूबोंमें नोकरीपर थे इनाम और खिलअत बखशे नजरें और पेशकशें भी कबूल हुई।

३ (वैशाख सुदि ४ । ९—१२ अप्रेल) को बादशाह बीमार हुए बहुत सा खून निकलवाने से बेहोशी होगई १० जिलहज (सावन सुदि १२ । १७ जोलाई) तक वही हाल रहा, हकीम मोहम्मद अमीन और हकीम महदी ने इलाज किया, बीमारी दूर करने वाली खैरातें हुईं १० (सावन सुदि १२ । १७ जोलाई) को बकराईद के दिन बादशाह नमाज पढने को ईदगाहमें गये॥

सब लोग उनको देखकर खुश हुए मानों दो ईदें हुईं।

१६ (भादों बदि ३ । १३ जोलाई) को ४६ वें कमरी साल लगने का तुलादान हुआ।

१७ (भादों बदि ४ । २४ जोलाई) को बादशाह नहाये।

सन् १०७३ सं० १७१९ । २०

गुजरात की सूबेदारी महाराज जसवंतसिंह से उतरकर महाबतखां को मिली। उसका मनसब भी बढकर ६ हजारी (९ हजार सवार का) होगया।

रजवीखां बुखारीको, जो घर में बैठ रहा था ढाई हज़ारी, (४०० सवारों का) मनसब इनायत हुआ।

आदिलखां के नौकर जो पेशकश लेकर आये थे खिलअत पाकर रुखसत हुवे।

तर्क़रुबखां मरगया उसके बेटे मोहम्मदअलीख़ां को जो बापके कसूर में मनसब से दूरहोगया था मातमी का ख़िलअत डेढ़ हजारी, २०० सवार का मनसब इनायत हुआ। सैफ़खां ने जो सरहदमें बैठ रहा था हाज़िर होकर खिलअत तलवार और दो हज़ारी डेढ़हजार सवार का मनसबदारी पाया।

१ जमादिउलअव्वल (पौषसुदि ३ । ३ दिसम्बर) को ४५ वें शमसीसाल का तुलादान हुआ।

निजाबतखां को फिर ९ हजारी ४००० सवार का मनसब मिला। यह पहिले साल में एक कुसूर के सबबसे खफगी में आया हुआ था।

---

(१) बादशाहने महाराजा जसवंतसिंहको गुजरातकी सूबेदारी देकर दाराशिकोह की मदद से बाज रक्खाथा।

सन् १०७३ हि० संवत १७१९ सन् १६६३ ई०

औरंगज़ेब–लाहौरमें.

७ (पौस सुदि ९ । ९ दिसम्बर) को बादशाह पंजाबकी तर्फ़ रवाने हुआ। करनालसे फ़ाजिलखां को फालतू कारखानों के साथ सीधे रस्ते से लाहौर जानेका हुक्म दिया और आप मुखलिसपुर की तर्फ़ से शिकार खेलते हुए १० रजब (फागुन सुदि १२।९ फरवरी १६६३ई०) को लाहौर में पहुंचे और ख़िदमतगारखां को कशमीरका रस्ता साफ़करने के वास्ते भेजा।

१९ रजब (चैतबदि २ । १४ फरवरी) को जूनागढ के फौजदार कुतुबुद्दीनखां ने जामनगरके जमीदार शत्रुसौल के चचा रायसिंह को ३०० भाई बंदों समेत मारडाला क्योंकि उसने शत्रुसाल के बाप रायमल के मरे पीछे फसाद करके शत्रुशाल को निकाल दिया था।

जामनगर का नाम बादशाह ने इसलामनगर रक्खा।

आसाम का बाकी हाल।

ख़ानख़ानां ने बरसात तैर करने के लिये मथुरापुरमें छावनी डाली थी। मेह बरसने पर तमाम जगह पानी ही पानी होगया। आसामवाले छेड छाड करने लगे सिपाही घोडेपर सवार नहीं होसकतेथे। राजा पेमनारायण ने भी कामेरूप के पहाडों से निकलकर थाने उठादिये। करगांव और मथुरापुर के सिवाय और कोई जगह बादशाही कबजे में नहीं रही, रसद बंद होगई हवा ख़राब होजाने से मरी पड़ी, बहुत से आदमी बादशाही लशकर के सिपाहियों और जानवरों की खुराक चांवल और गायके मांस पर थी। जो दुशमनों से बहुतसी छीन लीगईथीं। चारा बिलकुल नहीं था बीच में मेह थमा तो नाज की नावें भी आई। रबीउलअव्वल के अखीर (मगसर बदि में) पर जमीनें पानी में से निकलीं और फौजों ने आसपास में दौड़कर फिर कतल करना शुरू किया। राजा पहाड़ों में भाग गया और सुलह चाहने लगा मगर खानखानां सुलहको कबूल न करके कामेरूप को

---

(११२) कलकत्ते की प्रति में नामरूपहै।

रवाने हुआ। रस्ते में बीमार होगया। सिपाही जो मेहनत करते २ थक गये थे खानखानांके मर जानेके डरसे उसको छोड कर बंगाले को चलदिये, खान इस बातसे नाराज होकर ४ जमादिउलअव्वल (पौससुदि ६ । ६ दिसम्बर) को १ मंजिल और आगे गया लेकिन उसने फिर लौट चलना उचित समझा, राजा ने अपना पकड़ा जानां करीब देखकर दिलेरखां का वसीला उठाया उसने खानखानां को राजी किया।

६ जमादिउलसानी (माहसुद ७ । ६ जनवरी) को राजा के वकील आये। २० हज़ार तोला सोना १ लाख २० हैजार तोला चांदी २० हाथी सरकार के लिये १५ खानखानां के और ५ दिलेरखां के वास्ते लाये बाकी पैशकशें पहुंचने तक आसाम के राजा की बेटी और बेटेको जो कूचबिहार के राजा का नज़दीकी रिस्तेदार था और भी बड़े २ सरदारों के ४ बेटों को बंगाले में रहनेके लिये लश-कर में छोड़गये।

१० (माहसुद १३। ११ जनवरी) को खानखानां कामरूपके पहाडोंके नाके से लौटकर २९ (फागुनसुदि १—३० जनवरी) को लखुगर में पहुंचा।

१३ रज्जब (फागुण सुदि १५ । १२ फरवरी) को कचली से कूचकरके गांव बाडू में गवाहट्टी के सामने नदी के उधर उतरा, रशीदखां को कामरूपकी फौज-दारी पर भेजा. इस बीचेंमे खानखानांकी बीमारी बहुत बढगई थी इस लिये उसने असकरखां को कूचबिहार के फतह करने पर भेजा जिसे राजा पेमनारायण ने ले लिया था फिर खानखानां खिजरपुर को रवाने हुआ और १०रमजान (द्विं० चैतसुदि १२ । ९ अप्रैल) को खिजरपुरसे २ कोस इधर मरगया।

छठा आलमगीरी सन्।

१ रमजान (चैत सुदि ३ । ३१ मार्च) को छठा जिलूसी वर्ष लगा।

२५ रमजान (वैसाख बदि १२ । २४ अप्रैल) से दिल कुशाबाग में, जो रावी नदी के पार है, जशन की तैयारियां होने लगीं। बादशाह भी उसी दिन कश-मीर जाने के इरादेसे उस बागमें आगये और खानखानां के मरने की खबर सुनकर

---

(१) कलकत्ते की प्रति म ८ हजार तोला लिखा है (२) कलकत्ते की प्रति में दोनों राजाओंकी एक एक बेटियाँ लिखी हैं।

शाहजादे मोहम्मद मोअज्जम को मोहम्मद अमीनखां के डेरे पर भेजा। वह उसको हजूर में लेआया।

बादशाह ने उसको मातमी का खिलअत दिया।

ईद के दिन (बैशाख सुदि २। २९ अप्रेल) को शाहजादों और अमीरों को बखशिशें मिलीं।

३ शव्वाल) बैसाख सुदि ४। ५। १ मई) को कूच हुआ, इन दिनों में सेना ने अमीरुलउमरा के डेरे पर छापा मारा। उसका बेटा अबुलफतह मारागया, अमीरुलउमरा की उंगली कटगई यह वारदात अमीरउलउमरा की ग़फ़लत से हुई थी इस लिये बादशाह ने खफा होकर दक्खिन की सूबेदारी उससे छीन कर शाहजादे मोहम्मद मोअज्जम को दी और अमीरउलउमरा बंगाले की सूबेदारीपर भेजागया जो मोअज्जमखां के मरजाने से खालीथी।

सन् १०६७ हिजरी। संवत् १७१४। सन् १६५७ ईसवी.

औरंगज़ेब कश्मीरमें.

१४ (बैसाख सुदि ११। १२ मई) को भंबर में जहाँ से कश्मीर के पहाड शुरू होते हैं डेरे हुए मगर लाहौर में देर होजाने से पीर पंचाल के रस्ते का बर्फ़-पिघलगया था इसलिये उधर से जाना ठहरा। राजा जैसिंह और निजाबतखां को फालतू उर्दू के साथ चिनाब नदी के किनारे पर ठहरने का हुक्म हुआ। ताहिरखां और बहुतसे अमीरों को जागीरों में जानेकी रुखसत मिली, सफशिकनखां और कई अमीर भंबर की घाटी के नीचे चौकसी रखने के लिये तइनात हुए दूसरे अमीर और अमले वाले जो सवारी में थे उनको मोहम्मदअमीनखां और फाज़िलखां के साथ तीन मंजिल पीछे पीछे आनेका हुक्म दियागया।

१६ (जेठवदि २। १४ मई) को भंबर से कूचहुआ, पीर पंचाल पहाडसे उतरते हुए एक बडा हाथी चौंक कर बघूलेकी तरह से अचानक बेहीर में जापड़ा जिससे उस तंगघाटी में बड़ी खलबली मची कई सरकारी हथनियां और बोझ ले-

---

(१) फौज का बाजार वगैरह।

जानेवाले आदमी उसकी झपट से नीचे खड्डोंमें गिरकर ऐसे चकनाचूर हुए कि हाथियों तककी हड्डी ढूंढी नहीं मिली आदमियों का तो कहनाही क्या है। इस भयानक धक्के से बादशाह भी घबरागये और उसी दम उन्होंने अपने दिल में यह बात ठहरा ली कि फिर कशमीर देखने को नहीं आवेंगे।

१ जीकाद (जेठ सुदि ३ । २९ मई) को कश्मीर में पहुंचे। राजा रघुनाथ दिवान मरगया था इस लिये ११ (जेठ सुदि १३ । ८ जून) को वजीरका ओहदा फाजिलखां को और खानसामानी का ओहदा इफ़तख़ारखां को इनायत हुआ।

आलाहजरत (शाहजहां बादशाह) के राज में हरसाल ७९ हजार रुपये ५ महीनों में खैरात होते थे और ७ महीनों के वास्ते कुछभी नहीं था। बादशाह ने हुक्म दिया कि उन ५ महीनों में तो वही ७९ हजार रहें और बाकी ७ महीनों के वास्ते दस हजारका महीना मुकर्रर करके सालभर में कुल १ लाख ४९ हजार रुपये ग़रीबों को बांटे जाया करें।

१७ जीकाद (असाढ बदि ४ । १४ जून) को ४७ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान होकर हजूर और सूबों के सब बंदों को बख़शिशें मिलीं।

फाजिलखां दीवान होते ही बीमार होकर २७ (असाढ बदि १४ । २४ जून) को मरगया। उसके भतीजे बुरहानुद्दीन को जो उसी वक्त ईरान से आया था मातमीका खिलअत मिला।

सन् १०७४ हि.

बादशाह कश्मीर के सब स्थानों की बहार देखकर २२ मोहर्रम (भादोंबदि ८ । १६ अगस्त) को लाहोर की तरफ को लौटा। मालवे का सूबेदार जाफिरखां वजीर बनाने के लिये हजूर में बुलायागया और निजाबतखां उसकी जगह भेजागया।

७ रबीउलअव्वल (आसोज सुदि ८ । २९ सितंबर) को बादशाह लाहौर में पहुंचे।

११ रबीउलसानी (कातिक सुदि १२ । २ नवम्बर) को ४६ वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ।

आकिलखां को फिर २ हजारी ७०० सवार का मनसब मिला।

तरबीयतखां शाह ईरान अब्बास सफ़वी के खतका जबाब और ७ लाख रुपये की निहायत तुहफ़ा चीजें लेकर ईरान को रुख़सत हुआ।

सन् १०७४ हि० संवत् १७२१। सन् १६६३ ई०

औरंगजेब दिल्लीके रस्तेमें.

१७ (मगसर वदि ४। ८ नवम्बर) को दिल्ली की तरफ़ कूच हुआ। जाफ़र-खां ने पानीपत में हाज़िर होकर वजीरका बड़ा ओहदा पाया।

सन् १०७५ हि० संवत् १७२१ सन् १६६४ ई०

औरंगजेब दिल्लीमें.

चांदरात (मगसरसुदि २।२१ नवम्बर)को बादशाह की सवारी दिल्लीमें पहुंची

सातवां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (चैत सुदि ३। २० मार्च १६६४) को सातवां जिलूसी वर्ष लगा) खुशी की मामूली मजलिसें ईद की नमाजें और बखशिशें हुईं नजरें और पेश-कशें लीगईं।

२१ जीकाद (असाढ़बदि ७। ६ जून) को ४८ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान और जलसा हुआ।

शाहज़ादे मोहम्मद मुअज्जम की अरजी मोअजुद्दीन की मां से फिर एक लड़का पैदा होने की पहुंची बादशाह ने उसका नाम आअजुद्दीन रक्खा।

मुस्तफ़ाखां बुख़ारा और बलख के खानों के खतों का जवाब लेकर तूरान को रुखसत हुआ। एक लाख ५० हज़ार के जवाहर और जडाऊ चीजें तूरान और बुखाराके हाकिम अबदुलअजीजखां के लिये और एक लाख रुपये की बलख के खान सुबहानकुलीखां के वास्ते भेजी गई।

महाराजा जसवंतसिंह ने सेवा को सज़ा देने और उसके किलों के फतह करने में मिहनत तो बहुत की थी लेकिन जो बात बादशाह चाहते थे वह नहीं हुई इसवास्ते राजा जैसिंह को दूसरे नामी अमीरों के साथ उसके ऊपर बिदाकिया।

१९ रबीउलसानी (मगसर बदि ५ ।२९ अक्टूबर) को ४७ वें शमसी साल का तुलादान हुआ, बादशाह जादों और अमीरों के मनसब बढे ।

निजाबतखां के मरजानेसे खानदेश का सूबेदार वजीरखां मालवे का सूबेदार हुआ और खानदेश की सूबेदारी दाऊदखां को मिली जो राजा जैसिंहके मददगारों में था । उसको हुक्म पहुंचा कि अपने किसी भाई बंद को बुरहानपुर में छोडकर राजा के साथ जावे ।

बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जम की अरजी रूपसिंह राठौड की बेटी से २८ जमादिउलअव्वल (पौस बादि ३ । ७ दिसम्बर) को लड़का पैदा होने की आई जिस का नाम बादशाह ने सुलतान मोहम्मद अजीम रखा ।

आठवां आलमगीरी सन् ।

१ रमज़ान (चैतसुदि ३ ।९ मार्च सन् १६६५) से आठवां जिलूसी सन लगा मामूली महफ़िलें और बखशिशें हुईं ।

हाजी अहमदसईद ने जो ४ वर्ष पहिले ६ लाख ६० हज़ार रुपयेकी भेट लेकर मक्के और मदीने को गया था अब वहां से आकर १४ अरबी घोडे भेट किये । शरीफ मक्के का आदमी सैयद याहा भी अरबी घोडे और तबर्रूक (प्रसाद) लेकर आया उसको खिलअत और ६०००) इनाममें मिले ।

हबश और हजरमौत के हाकिमों के वकील सैयद कामिल और सैयद अबदुल्लाह अरजियां और सौगातें लेकर आये और वे खिलअत और रोकड़ रुपये पाकर निहाल हुए ।

यमन के हाकिम इमाम इसमाईल ने ९ अरबी घोडे भेजे ।

अब के नौरोज की महफिलें ५ दिन तक हुईं ।

आगरे का किलेदार एतबारखां मरगया वहां का फौजदार रादअंदाजखां क़िलेदार हुआ और उसकी जगह होशदारखां को मिली ।

८ जीकाद (जेठ सुदि १० । १४ मई) को महाराजा जसवंतसिंह ने दक्खन से आकर मुलाज़मत की ।

१७ (असाढ बदि ९ । २३ मई) को ४९ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान हुआ, हज़ूर और दूरके बंदों को निवाज़िशें मिलीं ।

हबश और हजरमौत के एलची अपने अपने लायक इनाम और खिलअतें पाकर रुखसत हुए ।

१० जिलहिज्ज (असाढ सुदि १२ । १४ जून) को बकराईद और १९ (प्र० सावन बदि १ । २७ जून) को गुलाबी ईद हुई ।

शाहज़ादों और अमीरों ने जडाऊ और मीनाकार सुराहियाँ नज़र कीं ।

राजा जैसिंह और दिलेरखां की कोशिश से पुरंधर और रुद्रमाल वग़ैरा कई किले सेवा के फ़तह हुए और वह पकडे जाने के डरसे राजा जैसिंह का बचन लेकर १० ज़िलहिज्ज (असाढ सुदि १२ । १४ जून) को बगैर हथियारों के मिलनेको आया । राजा ने सेवासे मिलकर उसे अपने पास बैठाया और जानकी अमान देकर जडाऊ तलवार और खंजर दिया और हथियार फिर से बंधाकर दिलेरखां के पास भेजा उसने भी उसके साथ तरह २ की रियायतें कीं सेवा ने ३३ क़िले बादशाही बंदों को सोंपदिये ।

सन् १०७६ (सं० १६२२) ।

बादशाह ने राजा जैसिंह की अर्ज से सेवाके नाम कसूरों की माफ़ी का फ़रमान और उसके बेटे संभा को ५ हज़ारी ५ हजार सवार दुअस्पा और तिअस्पा मनसब भेजा ।

राजा जैसिंह का बेटा रामसिंह जो हजूरमें था दिलेरखां दाऊदखां रायसिंह और कीर्तिसिंह वगैरह पर भी महरबानियां हुईं ।

---

(१) दोनों प्रतियों में १७ शव्वाल लिखी है सो गलत है १७ जीकाद चाहिये क्योंकि बादशाह का जन्म इसी तारीख को हुआ था । (२) कलकत्ते की प्रति में ८ जिलहज्ज है ।

बीजापुर का आदिलखां पेशकश देने में ढील करता था और सेवा को मदद देता था इसलिये राजा जैसिंह को फरमान लिखागया कि सेवा की वलायत का जो बादशाही कबजेमें आई है बंदोबस्त करके बीजापुर को जावे और किले को घेर कर उसकी फौजों को धुयें से उड़ादे ।

काजी असलम का बेटा मोहम्मद जाहिद लशकर का महोतसिब[1] मुकर्रर हुआ ।

जाफिर खां वज़ीर ने जमना के किनारे पर एक अच्छी हवेली बनाई थी बादशाह उसके देखने को गये जाफिरखां ने खूब नज़र निछावर की और पेशकश दी ।

अबदुल्लाहखां हाकिम काशगर के खान अबदुल्लाहखां के वास्ते खत का जबाब और कुछ तुहफे ख्वाजा इसहाकके हाथ भेजेगये ।

२९ रबीउलसानी (कातिक बदि १२ । २९ अकतूबर) को ४८ वें शमसी साल लगनेका तुलादान और उत्सव हुआ ।

राजा जैसिंह की अर्ज़ से आदिलखां के बडे अमीर मुल्ला अहमदनायता के बुलाने का फरमान लिखा गया । जो आदिलखां के कामों की दुरुस्तीके लिये राजा जैसिंह के पास आयाथा और दरगाह में हाजिर होना चाहता था । उसको आनेसे पहिले ही ६ हजारी (६ हजार सवार का) मनसब भी मिलगया ।

११ जमादिउल अव्वल[2] (कातिकसुदि १३ । १० नवम्बर) को कश्मीर के सूबेदार सैफखां की अरजी से मालूम हुआ कि हुक्म के मुवाफिक बडी तिब्बत के जमीदार दलदल महमल ने ताबेदारी कुबूल करके बादशाह के नाम का खुतबा अपनी विलायत में पढाया सिक्का भी चलाया है और वहां एक बडी मसजिदभी बनी है ।

बादशाह ने इसकाम के इनाम में सैफखां का मनसब बढ़ाया और खिलअत भी भेजा । छोटी तिब्बत के ज़मीदार मुरादखां को भी खिलअत इनायत हुआ क्योंकि उसने भी इस काममें खैर ख्वाही की थी ।

---

१ नमाज रोजे वगैरहका हिसाब पूछनेवाला । (२) कलकत्ते की प्रति में ११ जमादिउलआखिर (मगसरसुदि १२ । ९ दिसम्बर) है ।

७ रज्जब (पौससुदि ८।२ जनवरी स० १६६६) को बादशाहज़ादे मोहम्मदे मुअज्जम ने दक्खन से आकर मुलाज़िमत की।

दक्खन के अखबार से मालूम हुआ कि मुल्लाअहमद नायता जो हजूर में आता था रस्ते में मरगया उस के बेटे असद वगैरह को हाज़िर होने का हुक्म हुआ।

आलाहज़रत (शाहजहां का) मरना ।

अकबराबाद (आगरा) के ख़बर देनेवालों की लिखावट से मालूम हुआ कि १२ रज्जब (पौससुदि १३।८ जनवरी) को आलाहज़रत का पेशाब बन्द होगया। हकीमों ने इलाज करने से हाथ खैंच लिया है नाउमेदी ज़ाहिर करते हैं बादशाहने जाना तो चाहा था मगर होशियारी से २३ (माहबदि ९।१०।१९ जनवरी) को शाहज़ादे मोहम्मद मोअज्ज़म को पहिले भेजदिया।

२६ (माहबदि १३। २२ जनवरी) सोमवार को रात पड़ते ही बीमारी की सख्ती बढ़ी और उस बड़े बादशाह की जान निकलगई। बेगमसाहिब रादअंदाज़खां ख्वाजा बहलोल सैयद मोहम्मद कन्नौजी और काजी कुरबान ने गुसलखानेमें आकर कफन पहिनाया फिर लाश को समन बुर्ज से बाहर लाये जिसे होशदारखां सुबेदारने साथ जाकर जमनापार ताजबीबी के रोजे में दफन करदी उसवक्त शाहजहांकी ७६ वर्ष ३ महीने की उमर थी और ३१ वर्ष २ महीने बादशाही की थी।

शाहज़ादा पिछली रात को यह ख़बर सुनकर दूसरे दिन शहर में पहुंचा और मातमदारोंमें शामिल हुआ.

खबर पहुंचने पर बादशाह ने भी शाहजादों और बेगमों समेत मातमी कपड़े पहने और हुक्म दिया कि फरमानों में अब आलाहजरत का नाम फिरदोस आशियानी (स्वर्गवासी) लिखा करें।

सन् १०७६ हि. संवत् १७२२ सन् १६६६ ई०

औरंगजेब (आगरेमें)

९ शाबान (माहसुदि १०।४ फरवरी) को बादशाह जमना में होकर आगरे पहुंचे २० (फागुण बदि ७।१९ फरवरी) को दाराशिकोह की हवेलीमें उतरे

(१) कलकत्ते की प्रति में २८ शाबान (फागुण बदि ३०।२३ फरवरी) है

दूसरे दिन ताजबीबी के रोज़े की ज़ियारत करके तीसरे दिन किले में गये बेगम साहिब और दूसरी सब बेगमों को तसल्ली देकर मातमी कपड़े उतरवाये और मसलिहत देखकर कुछ दिनों के लिये वहीं रहे और अपनी बेगमों को भी दिल्ली से वहीं बुलवालिया.

इन्हीं दिनों में चाटगाम का किला अमीरुलउमरा की कोशिश से फ़तह होगया बादशाह ने उसका नाम इसलामाबाद रखा अमीरुलउमरा तथा उसके बेटे बुजुर्गउमेदखां और सारे सरदारों पर बहुत महरबानी की.

नवां आलमगीरी सन ।

१ रमज़ान (फागुणसुदि ३।२६ फरवरी) से नवां जलूसी वर्षलगा.

१ शव्वाल (चैतसुदि ३।२८ मार्च) को बादशाह ने ईद की नमाज पढ़कर बखशिशें कीं (०) बेगम साहिबा को १लाख अशरफियां देकर उनका सालियाना भी १२ लाख से १७ लाख का करदिया परहेजेबानूबेगम और गोहर आराबेगम को भी दो दो लाख रुपये मिले ।

आगरे के किले के ख़जाने जो पांचवें जिलूसी वर्ष में दिल्ली के किले में मंगवालिये गये थे फिर अब वहां से आगरे के किले में लायेगये.

राजा जयसिंह ने सेवा को हज़ूर में भेजाथा वह जब आगरे के पास पहुंचा तो कुंवर रामसिंह और मुखलिसखां पेशवाई करके उसको लाये ।

१८ ज़ीकाद (जेठबदि ५।१३ मई) को ५० वीं कमरी सालग्रह का तुलादान हुआ ।

सेवा ने अपने बेटे संभा के साथ जमीन चूमकर डेढ़ हजार अशरफी नज़र और ६ हज़ार रुपये निछावर किये ।

राजा जैसिंह ने सेवा को उसी के चाहने से दरगाहमें भेजा था और बादशाह उस के पिछले कसूरोंका ख्याल न करके चाहते थे कि महरबानी करके कुछ दिनों पीछे उसे रुख़सत करदें वह उसदिन एक मुनासिब जगह पर बड़े बड़े अमीरों के बराबर खड़ा किया गया था, पर जंगली था और दरबारका कायदा नहीं जानता

१।२।३ ये तीनों बादशाहकी बहनें थीं ।

था इस लिये उसने एक कोनेमें कुँवर रामसिंह से नाराजी जताकर बेजा गिला किया और उसका शिर चकराने लगा, इसलिये हुक्म हुआ कि डेरे पर जावें और रामसिंह उसको अपने मकानके पास ठहराकर उसके बेटे संभा को अपने साथ मुजरा करने के लिये लायाकरें सेवा छल कपट से भाग न जावे इस लिये फ़ौलादखां को उसकी चौकसीपर रक्खा और यह हाल राजा जैसिंहको फ़रमान में लिखा और उसके साथ बरताव करनेके लिये भी पूछा गया।

दो तीन दिन पीछे वह कपटी मारे डर के बडे बड़े अमीरोंका आसरा लेकर पछताने और गिड़गिड़ाने लगा। इतनेमें राजा जैसिंहकी अरज़ी भी आगई कि मैंने उस को बचन दिया है और इधर के कामों की मसलहत के लिये उसके कसूरोंसे दरगुज़र करना मुनासिब है बादशाह ने फ़ौलादखां को हुक्म देदिया कि उसके डेरे पर से पहरे उठाले और कुँवर रामसिंहने भी ख़बरदारीसे गफलत की इससे वह २७ सफ़र सन् १०७७ (भादों बदि १४।१९ अगस्त) को अपने बेटे समेत भेस बदलकर भाग गया। इससे रामसिंह का मनसब उतार लिया गया और राजा जैसिंह को लिखा गया कि उसकी अरज़ से सेवा के जिस नजदीकी रिश्तेदार नेथवा को ५ हज़ारी ५ हजार सवार का मनसब दियागया है और जो उसी के ही पास है किसी हिकमत से पकडकर हजूर में भेजदे।

सन १०७७ (सं० १७२३)

बादशाह ने बाजेकामों के लिये दिल्लीजाने का इरादा करके मलका बेगम साहिब को दूसरी बेगमों के साथ पहिले से रवाने कर दिया।

तरबीयतखां खत और तुहफे लेकर ईरान को गया था उसने वहां से शाह अब्बास की नादानी बदमिजाजी हदसे जियादा शेखी और घमंड की बातें अरज़ी में लिखकर भेजीं और यह भी लिखा कि वह चढ़ाई और लडाई के इरादे से खुरासानमें आना चाहता है। फिर तरबीयतखांके हजूर में पहुंचने पर भी यही हाल उसकी अर्ज और हलकारों की खबर से मालूम हुआ तो बादशाह ने उस पागल के कान अमेठने के लिये जो बगैर किसी सबबके दुश्मनी करना चाहता

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू लिखा है।

था इरादा करके १४ रबीउलअव्वल (आसोजबदि १ । ४ सितम्बर) को बादशाहजादे मोहम्मद मुअज्जम और महाराजा जसवंतसिंह को आगरेसे रवाना किया और फरमाया कि हम भी पंजाब की तरफ आते हैं और तरबियतखां से भी कई बातों में कुछ तकसीरें हुई थीं इस लिये उसका दरबार में आना बंद कियागया ।

सन् १०७७ हि. संवत् १७२३ सन् १६६६ ई.

औरंगज़ेब दिल्लीमें.

१९ रबीउलसानी (कातिक बदि ५।८ अक्टूबर) को बादशाहने भी पंजाब जानेके लिये जमना के रस्तेसे दिल्ली को कूच किया और १४ मंजिलोंमें वहां पहुंचे।

८ जमादिउलअव्वल (कातिक सुदी १०।२७ अक्तूबर) को ४९ वीं शमसी वर्षगांठका तुलादान हुआ.

काबुल के सूबेदार अमीरखांने कई मुग़लों को जासूसीके भ्रम से पकड़कर दरगाह में भेजा था. और हज़रतने एतमादखां और मुल्ला अबदुलकवी को तहकीकात करने का हुक्म दिया था । ऐतमादखां ने उनमें से एक को बगैर जंजीर और हतकड़ी के ख़िलवत में बुलाया था वह जाहिल अचानक उठकर बाहर गया और ख़िदमतगार के पास से जो उसके हथियार लिये खड़ा था तलवार ले आया और एतमादखां पर १ ऐसा हाथ छोडा कि उसकी जिंदगी का रस्सा कटगया जो लोग पास बैठे थे उन्होंने उसको भी मारडाला.

बादशाह को ऐसे पुराने मोतबर खिदमतगार के मारे जाने का बहुत अफ़सोस हुआ उसके बेटों और भाई बंदों को खिलअत दिये और उनके मनसब भी बढाये ।

बादशाह जाफ़रखां वजीर के घरपर गये उस ने जवाहर और जडाऊ चीजों की पेशकश गुजरानी ।

ख्वाजा इसहाक जो पिछली साल काशग़र की वकालत पर गयाथा और वहां फितूर होना सुनकर लौट आया था. अब फिर अपना रस्ता देखे जाने का हाल मालूम करके उधर को रुखसत हुआ ।

शाह ईरान जो बुरे इरादों से असफहान को रवाने हुआ था शराबी होने से गले के भीतर गांठें उठनेसे एक रबीउलअव्वल (भादोंसुदि ३।२२ अगस्त) को गांव खार, समनान के पास मरगया वजीरों ने उसके बडे बेटे सफी मिरजा को तख्त-पर बैठा दिया । २४ जमादिउलआखिर (पौसबदि १०-११।११ दिसम्बर को शिकारगाह खास में हरकारों ने यह खबर बादशाह से अर्ज कराई तो हजरतने फरमाया कि हम तो कुछ और ही चाहतेथे मगर खुदा ने उसको बदला देदिया अब मुरव्वत नहीं चाहती है कि ईरान पर फौज भेजें शाहजादा मोहम्मद मोअज्जम को लिखागया कि लाहौर से आगे न जावे कुछ दिन वहीं ठहरा रहे ।

बहादुरखा जो शाहजादे के साथ था रस्तेसे लौट कर हजूरमें आया और इलाहाबाद का सूबेदार हुआ, राजा जैसिंह ने सेवा के जमाई नत्थू[1] को पकडकर हजूर में भेजदिया जो फिंदाईखां को सौंपागया और वह मुसल्मान होकर अपनी मुरादको पहुंचा ।

जब राजा जयसिंह सेवा की मोहिम खतम करके आदिलखां को सजा देनेके लिये गया था तो दो मंजिल परही आदिलखां के सरदारों में से वह लोल का पोता अबूमोहम्मद राजा से मिला । राजा की अरज से उसको पांच हजारी ५ हजार सवारका मनसब इनायत हुआ और राजा के मददगारों में रखागया ।

राजाके इशारे से सेवा और नेत्थू[2] की कोशिश से जो सेवा का सिपहसालार था फेलैन[3], नाथूरा, खावन, और मंगलबेडे के किले फतह हुये और आदिलखां के सरदार अबूमोहम्मद खवासखां और वडी २ फ़ोजोंसे मुकाबिले हुये जिनमें बादशाही बंदोंकी जीत रही उन्होंने बीजापुर के तमाम इलाकों को घेरकर दो दफै लूटा । जब बादशाही लशकर बीजापुर से ५ कोस इधर पहुंचा तो आदिलखां ने बीजापुर के किले को सजाया । तालावोंको तोडदिया आसपासके कुओं में थूहर भरदिये किले के पास की बस्तियां उजाड दीं और किले में बैठकर बादशाही लशकर के मुकाबिले को अपनी फौजें निकालीं राजा का इरादा किला लेने का

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू लिखा है । (२) कलकत्ते की प्रति में नेतू लिखा है । (३) कलकत्ते की प्रति में फलतन और ताथूरा है ।

नहीं था और न किले तोडनेका सामान साथ था इस लिये कई दिन पीछे वहां से कूच करके २४ रज्जब (माहवदि ११।१० जनवरी) को भीमडा नदी से उतर आया, आदिलखां का मोतमिद दयानतराय उजेर आजेजी के संदेशे और बहुतसी जडाऊ चीजें राजा के वास्ते लाया बरसात भी आगई थी इसलिये हजूर से राजा को फरमान पहुंचा कि औरंगाबादमें बरसात तैर करे इसपर वह लडाई और दुशमनी छोडकर लौट आया।

इन्हीं दिनोंमें दिलेरखां बादशाह के हुक्म से पहिले तो चांदा की विलायत में गया वहां के जमींदार मानजीमल्लारने खान से मिलकर ५ लाख रुपये दिये; १ करोड रुपया सरकारी जुरमाने का और २ लाख सालाना मामूली पेशकशका देना कबूल किया।

दिलेरखां फिर देवगढ की विलायत में गया वहां के जमीदार केवलसिंह से ११ लाखें रुपये पिछले बाकी और ३ लाख रुपये साल और कबूल कराये और उधरके कामों से निवडकर बादशाह का हुक्म पहुंचते ही दक्खन को रवाने होगया उसको ५ हजारी ५ हजार सवार और दुअस्पे तिअस्पे का मनसब मिला।

१० वां आलमगीरी सन्।

१ रमजान (फागन सुदि ३।१५ फरवरी १६६७) को दसवां जलूसी वर्ष लगा।

१० (फागुन सुदि ११। २४ फरवरी) को उदैपुरी महल से लडका हुआ बादशाहने उसका कामबख्श नाम रक्खा।

शाहजादा मोहम्मदमोअज्जम लाहौर से आया, ईद के दिन (चैतसुदि ३।१७ मारच) को शाहजादों और अमीरों को बखशिशें हुई।

सेवा का जमाई नत्थूं जो मुसलमान होगया था मुसलमानी कराने के पीछे ३ हजारी २ हजार के मनसब और मोहम्मद कुलीखां के खिताब से सरफराज हुआ,

---

(१) माफी मांगने—(२) नम्रता। (३) कलकत्ते की प्रतिमें कूर्कसिंहहै। (४) कलकत्ते की प्रति में १५ लाख है। (५) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू।

बयूतातके दीवान मीर इमादुद्दीन को रहमतखां का और अजीजुद्दीनखां को बहरे मंदखां का खिताब इनायत हुआ।

(चैत सुदि ८।८ मारच) को शाहजादा मोअज्जम ९ हजारी जातके इजाफेसे २० हजारी (१२ हजार सवार का) मनसब पाकर दक्खन की सूबेदारी पर रुखसत हुआ। महाराजा जसवंतसिंह रायसिंह सफशिकनखां सफीखां और सरबुलंदखां नवाजिशें पाकर उसके साथ तईनात हुये राजा जैसिंह को हजूर में आनेका हुक्म लिखागया।

यूसुफजइ पठानोंका बलवा।

यूसुफजई अफगान १ फकीर को मोहम्मदशाह के खिताब से अपना सरदार बनाकर बागी होगये और मुल्ला चालाक और भाकू की अफसरीमें फसाद करने लगें। बादशाह ने अटक के फौजदार काबुलखां को हुक्म भेजा कि नीलाब नदी के आसपास जो जागीरदार हैं उन सबको जमा करके बनपड़े जहांतक पठानोंको सजा दे और काबुल के सूबेदार अमीरखां को भी लिखागया कि शमशेरखां को ९ हजार आदमियों से भेजे। काबुलखांने शमशेरखां के पहुंचनेसे पहिले ही दुशमनों से लडकर फतह पाई और थानोंपर फिर कबजा करलिया।

१२ जीकादे (वैशाखसुदि १५।२७ अप्रेल को शमशेरखां नीलाबसे उतरकर अटक की तर्फ आया और यूसुफजइयों की विलायत के सामने दरया से पारहोकर उनके इलाके में गया वे भी पहाडों में जाकर मौका देखने लगे।

इसीदिन बादशाह ने मोहम्मद अमीनखां मीर बखशी को अमीरखां किबादखां और ९ हजार सवारों के साथ पठानोंपर भेजा मगर उसके पहुंचने से पहिले शमशेरखां ने दो बार लडकर उनके ३०० मोतबर मालिकों को पकड़ लिया था। बादशाह ने यह खबरें सुनकर शमशेरखां और काबुलखां को खिलअत भेजे।

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें सैफखां। (२-३) कलकत्ते की प्रतिमें कामिलखां। (४) कलकत्ते की प्रति में १८ जीकाद हैं। (५) सरदार मुखिया। (६) कलकत्तेको प्रति में कामिलखां।

२९ जीकाद (जेठबदि १२।९ मई) को इक्कावन वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान हुआ ।

बादशाहजादे मोहम्मदआजम को ३ हजारी जात के बढने से १९ हजारी ७ हजार सवार का मनसब मिला और शाहजादे मोहम्मद अकबर को ८ हजारी २ हजार सवार का मनसब तूमान तोग नक्कारा और आफताबगीर इनायत हुआ ।

जाफिरखां और हजूर तथा दूर के दूसरे अमीरोंपर तरह तरह की इनायतें अता हुईं ।

बुखारा और बलखके वकील रुस्तमबेग और खुशीबेग खिलअत और नकद इनाम पाकर रुखसत हुए अव्वल दिन से आखिर तक बुखाराके सफीरै को दो लाख और बलख के वकील को डेढलाख रुपये इनायत हुये थे ।

रजवीखां बुखारी आबिदखां की जगह सदैर के ओहदे पर मुकर्रर हुआ ।

तरबीयतखां के कसूर माफ हुये और वह खानदोराँ के मरजाने से उडीसे की सूबदारी पर गया ।

सन् १०७८

बुरहानपुर के खबर नवीसों की लिखावटों से अर्ज हुई कि राजा जैसिंह जो औरंगाबाद से चलकर हजूर में जाता था २८ मोहर्रम (सावनबदि ३०।११ जोलाई) को मरगया बादशाहने उसके कुँवर रामसिंह को कसूरों की खफगी से निकाल कर राजा का खिताब सब बखशिशों के साथ दिया ।

मोहम्मद अमीनखां ने पठानों की बलायत में पहुँच कर जहांतक होसका उनकी बास्तियों को लूटा और बिगाडा फिर बादशाह का हुक्म पहुंचा कि शमशेरखां को वहां छोडकर लाहौर में आवे और वहां की सूबेदारी का काम करे जो इब्राहीमखां से उतारली गई थी ।

२९ जमादिउलआखिर (पौसबदि १२।२ दिसम्बर) को ९० वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ ।

---

१ एलची वकील भला आदमी । २ दानाध्यक्ष ।

सूबे कशमीर के विकाये निगारों[1] (खबर नवीसों) और तिब्बत के जमीदार मुरादखां की अरजियों से मालूम हुआ कि काशगर का खान अब्दुल्लाहखां अपने बेटे अबुल्लरस के जोर पकड जाने से बालबच्चों और थोडे से नोकरों के साथ लुटा पिटा इस दरगाह में पनाह लेने के वास्ते आरहा है, ख्वाजा इसहाक जो सफीर होकर यहां से उसके पास गया था उस हालतमें उससे मिलकर उसे मदद दे रहा है और वह अब कशमीर में पहुंचने वाला है।

बादशाहने इस खबर के सुनते ही बडी महरबानी और कदरदानी से ख्वाजा सादिक बदखशी और सेफुल्लाह को उसकी महमानदारी के लिये भेजा और उसके खाने के मय वास्ते १ खंजर जडाऊ जीगा[2] १०९ घोडे अरबी इराकी और तुरकी जिनमें कई जडाऊ साजके थे २ हाथी बहुत से सोने चांदी के बरतन कपडे लत्ते डेरे खेमें अच्छे २ फर्श बिछौने और भी दूसरे सामान सरदारी के उसके हवाले किये और फरमाया कि कशमीर जाकर उस बडे खान से मिलें और हजूर में पहुं-चने तक उसकी महमांदारी करते रहें, कशमीर के सूबेदार मुबारजखां को भी हुक्म लिखागया कि जब खान कशमीर में पहुंचे तो वह सरकार की तर्फ से उसके वास्ते तमाम जरूरी सामान तैयार करादेवे और ५० हजार रुपये उस सूबे के खजाने से देकर जब वह दरगाह को रवाने होवें तो साथ रहकर उसको हजूर में पहुंचावे।

मोहम्मद अमीनखां सूबेदार लाहौर को भी हुक्म पहुंचा कि जब खांन वहां पहुंचें तो वह भी बहुत इज्जत और अदब से मिलकर उसकी अच्छी तरहसे जैयाफतें[3] करें।

२५ हजार रुपये सरकार खालिसे से और बहुत से रुपये और तुहफे अपनी तर्फ से भी दें इसी तरह के हुक्म रस्ते के सब हाकिमों और फौजदारों को भेजे गये कि जगह २ महमानदारी करें और अपनी २ हदोंसे उसे अच्छतिरह आगे रवाने करदें।

१३ रजब (पौस सुदि १४।१९ सितम्बर) को मोहम्मद अमीनखां के बदले जाने से दानिशमंदखां मीरबख्शीके बडे ओहदे पर पहुंचा खिलअत खासा और जडाऊ कलमदान भी उसको इनायत हुए।

---

१ समाचार लिखने वाले। २ कीट। ३ मिजमानी।

ख्वाजा बहलोल को गवालियर की किलेदारी मोतमदखां के बदलेजाने से इनायत हुई। खिलअत घोडा खंजर और खिदमतगारखां का खिताब भी मिला और जो खिदमतगारखां था वह खिदमत गुजार खां कहलाने लगा।

बंगाले के अखबार से मालूम हुआ कि अब फिर आसामवाले अपनी हदसे आगे बढे हैं बहुतसा लशकर और बड़े २ निवाडे लेकर गवाहट्टी तक चले आये हैं, जो बंगाले की सरहद पर है वहां के थानेदार सैयद फीरोजखां को मदद न मिलने से हराचुके हैं, फिरोजखां और उसके अकसर साथी लडाई में मारे गये हैं। यह सुनकर बादशाह ने चाहा कि कोई बडा अमीर हजूर से लशकर लेकर बंगाले को जावे और उस सूबे के कुछ मददगारों को भी अपने शामिल करके उनको सजा दे राजा रामसिंह ने इस ख़िदमत का बीड़ा उठाया। खिलअत सोने के साज का घोड़ा मोतियों की लडोंका जमधर पाकर २१ (माहबदि ७।२७ दिसम्बर) को रामसिंह रुख़सत हुवा। कीरतसिंह मुरठिया, रघुनाथ सिंह मेडतिया बीरमदेव सीसोदिया वगैरह सरदार मनसबदार डेढ हजार अहदी और ९०० बर्कंदाज उसके साथ तइनात हुये।

यह देहसाले आलमगीरी का खुलासा पूराहुआ अब आगे मुआसिर आलमगीरी का तर्जुमा है।

---

(१) राठोड़। (२) दहसाले आलमगीरी या आलमगीर नामा जिस में औरंगजेब की पूरी तवारीख १० वर्षकी लिखी है बहुत बडी किताब है जिसका यह इतनासा खुलासा मासिर आलमगीरी के कर्ता ने अपनी किताब के शुरूमें लगाया है।
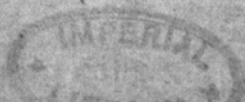
सूचना-

समाचार पत्र पाठक महाशय ! औरङ्गजेबनामाके इन तीन खण्डोंको हिफाजतसे रक्खेंगे ताकि शेष खंड अगले उपहारमें मिलनेसे आपका ग्रंथ पूर्ण होजायगा ।

आपका शुभचिंतक-

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालयाध्यक्ष,-बंबई.